१।८७

२।८७

३।८७

४।८७

५।८७

FORM 1

(See Rule 8)

place of publication	Hoshiarpur
Date of publication	10th of every month
periodicety of publication	Montoly
printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir Hoshiarpur
Editor's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the total	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : *Signature of Publisher*

Printed and published by : Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshirpur for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

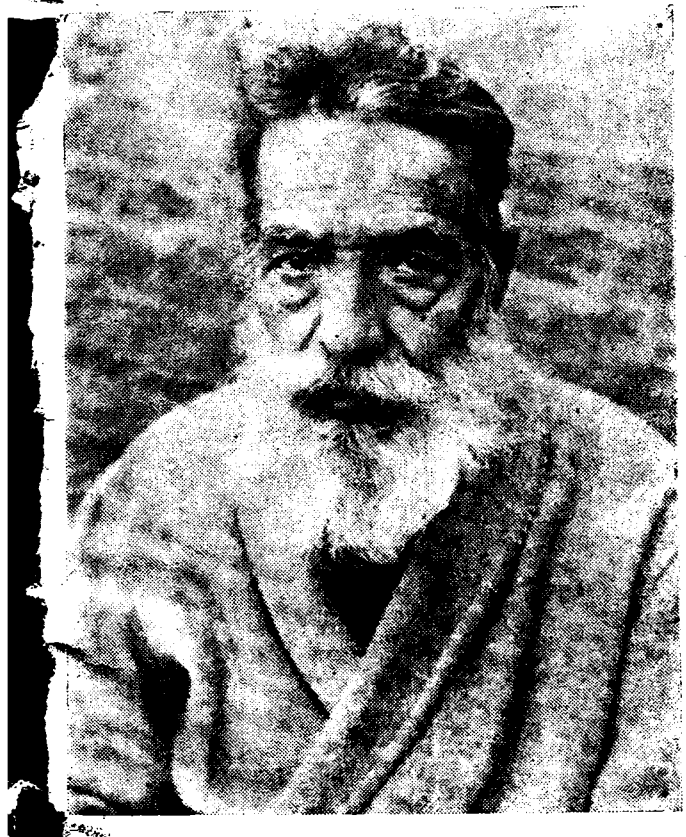

Param Sant Param Dayal Faqir Chand ji Maharaj

Param Sant Manav Dayal Dr. I. C. Sharma ji Maharaj

पाक्षिक—

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र

BE MAN
मनुष्य बनो

सम्पादक :
डा० परस राम अग्रवाल

| वर्ष 13 | शनिवार 10 जनवरी 1987 | संख्या 9 |

सत्संग हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

राधास्वामी धाम 26—10—1930

खुराक और राधास्वामी मत

इस तरह ज्यादा से ज्यादा खुराक न खा कि तेरे मुँह से बाहर निकलने लगे न इतना थोड़ा खा कि कमज़ोरी से जान निकलने का डर रहे। राधास्वामी मत पर बहुत से लोग नुक्ताचीनी करके इस तरह के एतराज़ करते हैं कि राधास्वामी मत के मानने वाले हमेशा कमज़ोर और दुबले-पतले होते हैं। शुरू में यह हालत थी कि इस किस्म की शिकायतें सुनी जाती थीं। उसकी वजह यह नहीं है कि राधास्वामी मत की तालीम में कोई गलती है बल्कि सच्चाई यह है कि अभ्यास करने वालों को रूहानी लज्ज़त अधिकता के साथ मिलने लगी है। तो शारीरिक सुख की तरफ से इनका ख्याल जाता रहा और इससे इन्कार नहीं किया जाता कि इनमें से किसी को तपेदिक की बीमारी हुई, किसी को दिल की बीमारी हो गई और किसी को बवासीर हो गई और नुक्ताचीनियों को आम तौर पर गलत ख्याल दिलावे का मौका मिल गया।

यह सिर्फ राधास्वामी मत के शुरू होने की हालत नहीं थी बल्कि हमको यह याद है कि जिस वक्त मैडम ब्लोलैकी और कर्नल स्काट साहिबान सोशल सोसाइटी के नियम लिखने लगे तो उसके मेम्बरों की तरह-२ की डरावनी सूरतें पैदा हो गईं। इनमें से कोई लम्बे-२ बालों वाला था और कइयों के नाखून बढ़े हुए थे। सूरत और चाल-ढाल में खास किस्म की तबदीली आ गई और इनमें भी बहुत से कमज़ोर आदमी अधिक गिनती में हो गये। लेकिन जिस तरह राधास्वामी मत बेकसूर है इसी तरह सोशल सोसाइटी के ज़िम्मे किसी किस्म का नुक्स नहीं लगाया जा सकता। आजकल हम देखते हैं कि पंजाब के देवसमाजियों की सूरत भी किसी किस्म की साफ-२ रहती है और उन में भी शरीर की कमज़ोरी होती है। यह किसी सोसाइटी का कसुर नहीं बल्कि उसके आदमी जिस वक्त मुनासिब असूलों से बढ़ जाते हैं और ज्यादती की तरफ लग जाते हैं तो इस किस्म की हालतों का पैदा होना ज़रूरी है।

सत् पुरुष राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है :—

"भोजन बहुत न खा, तेरे भले की कहूँ"

यहाँ ज्यादा खाने के बारे में नसीहत दी गई है क्योंकि जो बहुत खाता है उसका ध्यान रूहानियत की तरफ कम होता है। दिमाग की धार खाने को हज़म करने के सिवा और किसी तरफ ध्यान नहीं दे सकती और ज्यादा खाने वाला पशुओं के समान होता जाता है। कहा गया है कि ज्यादा खाने वाला दुःखी होता है और इसमें ज़रा भी शक की गुंजाइश नहीं है। ज्यादा खाने वाले लोगों को पेटू कहने के साथ बुरी नज़र से भी देखते हैं। इसका मतलब यह नहीं समझना चाहिए कि खाने-पीने में ज्यादा कमी कर दी जाये। खाओ-पीओ लेकिन परहेज़ से।

के कारण हैं। इस पर इतना ही लिखना काफी है। अब लोग ज्यादा खाते हैं उनके बारे में सुनो पुराणों का एक किस्सा सुनाते हैं।

दक्ष प्रजापति पेट का नाम है। यह संस्कृत धातु "दक्ष्" पढ़ने से निकला है। यह दक्ष प्रजापति ब्रह्मा का लड़का कहलाता है। इस की साठ (60) लड़कियाँ हैं। इनमें से 27 चन्द्र के साथ विवाही हैं और 17 कश्यप ऋषि की पत्नियाँ हैं। जिनकी औलाद सारी दुनिया में फैली हुई है और इसी की एक लड़की सती शिव की पत्नी थी। शिव कहते हैं कल्याणरूपी, प्राणरूपी वायु को और सती कहते हैं हस्ती (ज़िन्दगी) को। हस्ती का मतलब है प्राण से। इस नजर से सती शिव की पत्नी है। दक्ष प्रजापति यज्ञ करते हुए सब को उसका हिस्सा निकाल-2 कर दिया करता है जिस पर सब का जीवन निर्भर है। यहाँ तक इन्सानी जिस्म का रूप-रंग उसी की ज़बान में चन्द्र मुराद है। उसका भी निर्भर होना इसी दक्ष के तक्सीम किये हुए हिस्से पर निर्भर है। इसी तरह कश्यप ऋषि जो सारी दुनिया को पैदा करने वाला है वह भी ज़िन्दगी का निचोड़ है जिसके साथ दक्ष की 17 लड़कियों की शादी हुई है। इसका मतलब यह है कि सारी दुनिया पेट रखने वाले दक्ष प्रजापति के दान के ऊपर निर्भर है। इस दक्ष प्रजापति ने दक्ष यज्ञ किया। अनाज की आहुतियाँ ठोस-2 कर दीं। कल्याणरूपी शिव का ख्याल नहीं रखा जो प्राणवायु कहलाता है और उसकी बीबी सती को नाराज़ कर दिया। जब पेट में खुराक ज्यादा गई सती यानि ज़िन्दगी का दम घुटने लगा उसी वक्त प्राण का दक्ष के ऊपर क्रोध हुआ और उसने आकर उसका सिर काट दिया। इसका मतलब यह है कि जो खाने-पीने के बारे में परहेज़ नहीं करता है वह अपने पेट के साथ अति दुश्मनी

करता है। दवा से इलाज हुआ, कुछ अच्छा होने के आसार नज़र हुए मगर डर और कमज़ोरी हद से ज़्यादा थी। दक्ष के सिर पर बकरे का सिर लगाने का यही मतलब है।

इस पौराणिक किस्से का मतलब यह है कि अगर पेट ठोस-ठोस कर भरा जाता है, तो साँस लेने में कष्ट होता है। प्राण का गुस्सा होता है और हालत कहने के काबिल नहीं होती और शिव के गण बुखार वगैरा पैदा होकर दक्ष की दुनिया को बीमार करते हैं और मुँह से सीधी-2 बात भी नहीं निकलती। इस क़दर बयान ज्यादा खुराक के मुतलिक काफी समझो।

ज्यादा खुराक खाने को छोड़कर जो लोग ठीक-ठीक रास्ता अपनाते हैं उन्हें कोई बीमारी नहीं होती और उनकी सेहत में कोई खराबी नहीं होती।

एक किस्सा है कि नौशेरवाँ बादशाह ने अरब देश की तरफ पारसी हकीम भेजे कि उनका अरबी लोगों को दवा-इलाज का लाभ पहुँचता रहे। यह हकीम कई साल अरब में रहे लेकिन एक भी बीमार उनके पास नहीं आया और न किसी ने दवा-दारु की प्रेरणा की। यह खुद अरबों से मिलकर पूछने लगे। "भाई क्या वजह है कि तुम बीमार नहीं होते और बतौर हकीम हमारे इलाज की सेवा से लाभ नहीं उठाते"। अरबों ने जवाब दिया "खाने-पीने के मुतलिक हमारे दो असूल हैं—अव्वल तो जब तक हमें भूख नहीं लगती हम खाना नहीं खाते। दूसरे अभी अच्छी हालत होने में कुछ थोड़ी सी कसर बाकी रह जाती है कि हम खाने-पीने की तरफ से अपना हाथ खींच लेते है"। पारसी हकीमों ने कहा इसलिए तुमको हमारी सेवा की ज़रूरत नहीं है और वहाँ से ईरान में चले आये और बादशाह से कहा "हमको बिना ज़रूरत के अरब की तरफ भेज दिया गया। अरब

लोग खाने-पीने के मुआमले में अच्छा ध्यान रखते हैं और इसलिए उन्हें इलाज की ज़रूरत नहीं है"। इस क़दर ध्यान खाने-पीने में न ज्यादा कम और न ज्यादा खुराक खाने की सूझ-बूझ रखते हैं।

अब जो लोग राधास्वामी मत के मानने वालों के मुतलिक एतराज़ किया करते हैं उनको खुद सोचना चाहिए कि क्या राधास्वामी मत जो शिक्षा देता है वह असल में नुकसान देने वाली है और कम-अक्ल सत्संगियों की ज्यादती उनकी सेहत के लिए नुकसान देने वाली है।

अभ्यास करने से दिल हल्का और पवित्र बनता है और दिल का खुश होना भी शरीर को हल्का और पवित्र बनाता है। इसलिए दोनों को प्रसन्नता के हालात में रहना चाहिए और तन्दरुस्त शरीर तन्दरुस्त दिल के असर से अच्छी हालत में रहता है। यहाँ दरअसल में शिकायत की कोई बात नहीं है। यह गलती कम-अक्ल वाले सत्संगियों की है जो अन्दरूनी मज़े के ख्याल से वह जिस्म की तरफ से बिलकुल बेफिकर बन जाते हैं और अपनी सेहत का नुकसान कर लेते हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सत्संग परमदयाल

फ़कीर चन्द जी महाराज

काल और माया

संसार वालो ! अपने कर्मभोग या मौज आधीन कुछ लिखना चाहता हूँ। क्या ? अपने सारे जीवन की खोज का परिणाम। मुझमें बचपन से उस परमतत्त्व, आधार, मालिके कुल के मिलने या जानने की भारी तड़प थी। मौज मुझे दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी की चरण-शरण में ले गई। वहाँ से राधास्वामी मत, कबीर मत आदि की शिक्षा का संस्कार मिला। जो कुछ मुझे अनुभव हुआ उसको विभिन्न ढंगों में ज़बानी और लेखों द्वारा प्रकट किया। इसमें मैंने किसी प्रकार का पर्दा या गरज़ नहीं रखी। अब जीवन समाप्ति पर है संसार को निज अनुभव बताता हूँ। यदि अपनी ओर से कहूंगा तो दुनिया नहीं मानेगी। इसलिए कबीर साहिब आदि सन्त की आदि वाणी को सुनाता हूँ।

मैंने इस वाणी को सत्य अनुभव किया। जीवन में काल और माया के शब्द सुनता था। अब समझ आ गई। सुनो ! वह मालिके कुल या अकाल, जीवन की अथवा अस्तित्व की वह अवस्था है जहाँ किसी प्रकार की गति नहीं है। जहाँ

गति है वहाँ समय का होना आवश्यक है।

जाग्रत अवस्था में गति है, स्वप्न में विचार (मन) गति करता है। सुषुप्ति में, यद्यपि प्रकट रूप से प्रतीत नहीं होती मगर गति सूक्ष्म या कारण रूप में मौजूद है। इसका मुझको निज अनुभव है। आज प्राकृतिक रूप से नींद न आये हुए 13 वर्ष हो गये। मैं योग द्वारा निद्रा प्राप्त करके अपने शरीर की थकावट दूर करता हूँ।

इसके अतिरिक्त अन्तरीय प्रकाश में प्रकाश रूप होने या प्रकाश को देखने में भी अन्तरीय प्रकाश की गति मौजूद रहती है। विभिन्न प्रकार के प्रकाशों का प्रकट होना इस गति के होने को सिद्ध करता है। साथ ही अनहद शब्द का सुनना और भिन्न-२ प्रकार के शब्दों का प्रकट होना गति के मौजूद होने का प्रमाण है। हाँ, एक ऐसी अवस्था का अनुभव हुआ जहाँ किसी प्रकार की गति नहीं है। वहाँ न फकीर है, न उसकी देह, न मन न आत्मा, न शब्द न प्रकाश न सुरत।। वह क्या है ?

सब की आदि कहूँ अब स्वामी।
अकह अगाध अपार अनामी ।। (रा. स्वा. द.)

इसके साथ एक और शब्द सुनो :—

जग जाग्रत भव दुःख मूल। सुपना भी दुःख सुख मूल ।।
सुषुपति कुछ घर आराम। वह भी नहिं ठहरन धाम ।।
तीनों में भरमत आठों जाम। पूरा नहीं कहीं विसराम ।।
अब करिये कौन उपाय। का से अब पूछूं जाय ।।
तड़पूं और तरसूं निस दिन। विरह अग्नि जलूं मैं दिन-2 ।।
कोई राह न सुख की पावे। सब करम भरम भरमावे ।।
कोई तीरथ बरत बतावे। कोई जप तप माहिं लगावे ।।

निज भेद कहे नहीं कोई। बिरथा नर देही खोई ।।
यह सोच करा मैं भारी। तब सतगुरु आन सम्हारी ।।
कर दया भेद बतलाया। तुरिया पद मारग गाया ।।
तुरिया से आगे बरना। फिर उससे आगे चलना ।।
तिसके भी परे लखाया। उसके भी पार सुनाया ।।
तिस परे और समझाया। कुछ आगे और बुझाया ।।
वहाँ से पुनि आगे भाखा। निज धाम मुख्य यह राखा ।।
संतन गति अगम सुनाई। जहाँ वेद कतेब न जाई ।।
तुरियों में सब थक बैठे। आगे कोई मर्म न देखे ।।
इतने पद संत बताई। बिन सुरत शब्द नहिं पाई ।।
सतगुरु फिर भेद बतावें। अब खुल कर तोहि सुनावें ।।
तुरिया पद सहस कंवल में। तिस आगे चढ़ त्रिकुटी में ।।
दस द्वारा सुन में खोलो। फिर महासुन्न चढ़ तोलो ।।
चढ़ भंवर गुफा तब आई। फिर सत्त नाम पद पाई ।।
वहाँ से भी चली अगाड़ी। हुई अलख पुरुष दरबारी ।।
जाय अगम लोक को लीन्हा। लीला सब वहाँ की चीन्हा ।।
राधास्वामी धाम लखाया। अब यही ठीक घर पाया ।।
वह तुरिया भी नहिं पावें। बातों की तुरिया गावें ।।
तीनों[1] में चेतन बरते। वाही को तुरिया कहते ।।
बाचक यह बड़े अन्याई। अवस्था चौथी सोऊ गंवाई ।।
जोगेश्वर ज्ञानी पिछले। चढ़ मूरधनी[2] घट खेले ।।
उन चार अवस्था गाई। पंचम कहा चेतन भाई ।।
चारों से न्यारा गाया। ताहि आतम भाख सुनाया ।।
इन मूरधनी घर त्यागा। मन अकाश आतम कह भाखा ।।
क्योंकर इन कहू बुझाई। इन बहुतहि धोखा खाई ।।
राधास्वामी कहत सुनाई। तुम बचियो इनसे भाई ।।

---

(1) जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति (2) ओंकार पद।

जो कुछ मेरा निज अनुभव हुआ स्वामी जी की वाणी इसे सिद्ध करती है। अतः मैं अन्धविश्वास से नहीं किन्तु वास्तविकता की दृष्टि से अपने अनुभव को सत्य समझता हूँ।

तमाम रचना—कारण, सूक्ष्म और स्थूल का स्रोत वह है, जहाँ गति नहीं है, उसको अकाल पुरुष कहते हैं। दूसरे सन्त अनामी पद कहते हैं। सब कुछ इसी से बनता है और इसी में लय होता रहता है। इस अनुभव के आधार पर कहे देता हूँ कि ऐ संसार वालो! तुम्हारे जितने आइडियल हैं तुम्हारे योग, कर्म, विचार, साधन सब के सब गति (काल) के अन्तर्गत हैं। इसलिए उस मालिक के नाम पर जो तुम अनेक प्रकार के धर्म, पन्थ, सम्प्रदाय, भक्तियाँ तथा कर्म बताते हो यह सब के सब गति (काल) के अन्दर हैं और उससे जो परिणाम उत्पन्न होते हैं वह माया देश है। दूसरे शब्दों में गति काल है और गति के परिणाम का नाम माया है।

इस अज्ञान के कारण भारतवर्ष विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय तथा आइडियल में बदल गया और मानव जाति आपस में द्वेष, घृणा, मत्सर का शिकार हुई। परिणाम इसका अशांति और दुःख सिद्ध हुआ। इस अशान्ति, द्वेष और घृणा को दूर करने के लिए सन्तों या पूर्ण पुरुषों का प्राकट्य हुआ। वह उच्च स्वर में कह गये :--

इस काल ने जग भरमाया। (रा. स्वा. दयाल)
इस काल ने सब जग खाया। (सन्त कबीर)

इसलिए ऐ मानव जाति! अपना आइडियल बेहरकती (कूटस्थ), अकाल, अनामी पद को बनाओ और जब तक काल में हो, अर्थात् जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया, तुरिया-तीत में हो, इस काल अर्थात् शारीरिक, मानसिक और

आत्मिक गति को सम करके रखो, काबू में या संयम में रखो। यही जीवन का रहस्य समझ में आया है। दाता दयाल का शब्द पढ़ो :--

साधो जहाँ चाहे समधार ।।

सर तोंबा अरु तन है तूंबी, नस नाड़ी सब तार।
साँची कहूँ तो कोई न माने, तेरी देही सितार ।।

इस काल चक्र के खेल अर्थात् गति में समता को रखना ही सन्तमत है। इसका दूसरा नाम ज़ब्त रखा है। स्पष्ट शब्दों में तन्दरुस्ती—तन की समता रहे, मन दुरुस्ती-मन की समता रहे, रूह दुरुस्ती--शब्द और प्रकाश अपने काबू में रहें, तब जीवन जो गति है आराम से व्यतीत हो सकता है।

इसकी प्राप्ति का सरल मार्ग किसी ऐसे पूर्ण पुरुष का दर्शन और सत्संग है जो स्वयं अकाल अवस्था अर्थात् अनामी पद का वासी हो और गति (काल) में समता की अवस्था में रहने वाला हो। उसकी Radiation प्रकाश, उसका हित और मत तुमको स्वयं उस अवस्था में—समता अर्थात् बेफिक्री, बे-गमी और शान्ति की अवस्था में ले आयेगा। जिस तरह स्त्री की संगत तुम में काम पैदा करती है, इसी तरह किसी पूर्ण पुरुष की संगत और प्रेम तुम में वह अवस्था उत्पन्न करेगा।

इसलिए—

ले जाओ ले जाओ समता की दौलत समता की गंगा बह रही।
प्रगटा जग में है दयाल फकीर, समता की बारिश हो रही ।।
बिन दाम के दौलत बाँट रहा, दिल में दया समा रही।
भूल भरम अज्ञान अन्धेरा, तारीकी दिल की जा रही ।।
जीवन में लोग गाली देते, मरने पर समाधि बनायेंगे।
इन्सान की खसलत अजीब है, भेद को वे नहीं पायेंगे ।।

इस ज़माने में प्रगटा है, भारत की यह देख दशा।
जो कुछ देखा जुल्म व सितम, वह हालत मुझे सिखाय रही ।।
इन्सान बनो इन्सान बनो, इन्सान बनो की मेरी दुहाई है।
सुनो साधु सन्तो महात्माओ समझो अब समय गया बदल ।।
काठ की हंडिया सदा नहीं चढ़े, अब विवेक अगिन जलाय रही

इस अज्ञान और भ्रम ने जीवों को विभिन्न धर्म, पन्थ आदि के चक्र में जकड़ रखा है। स्वामी जी का कथन है कि 'ऐ माया ! मेरा जीव तू न ले जा सकेगी, अतः सत्संग का निमन्त्रण देता हूँ, नहीं मालूम मौज ने कितने दिन यहाँ काम लेना है।

पूर्ण भाग्यवान् होने की ४ श्रेणियाँ

विवश होकर मौज घसीटती और कार्य कराती है। जीवन सन्तमत में व्यतीत हुआ। अन्तिम अवस्था आ गई। अब यह दशा है।

चरन शरन गुरु देव की मिली भाग जगा मेरा।
निर्भाग्य से भाग्यवान् हुआ यह अनुभव है मेरा॥
धन्य धन्य गुरु देव दिया नाम का दाना।
नाम रहस्य को समझकर मिला ठौर ठिकाना॥
सहस कमल दल क्या है! क्या त्रिकुटी स्थाना।
सून्न महासुन्न के भेद मैं खूब ही जाना॥
भँवर गुफा आत्म पद पाय खुद ही हर्षाना।
सत अलख अगम के भाव को समझ तृप्ताना॥
अब पूरन भाग्य है पूरन रूप समाना।
होश में आकर हर समय नित्य गुरु गुन गाना॥

मैं सत्यता का सन्देश देता हूँ कि यदि किसी को सत पुरुष का सत्संग मिल जाये और उसके सत्संग से रहस्य अथवा भेद समझ लिया जाये और वह उस पर आरूढ़ हो जाये तो जो प्राणी अपने आपको भाग्यहीन, दुःखी, अशान्त, भ्रान्तमय समझे बैठा है वह भाग्यशाली हो सकता है। वह कैसे?

भाग्य कहते हैं अंश को या टुकड़े को। मानव शरीर, मन और आत्मा मिश्रित वस्तु से बने हुए हैं। इसके पाँच कर्म इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, मन, चित, बुद्धि, अहंकार और आत्मा हैं। जिस शक्ति के आधार पर अथवा जिस

शक्ति से हमारे अन्दर यह सब कुछ बनता है, मुझे नहीं पता कि शास्त्र उसको परमतत्त्व कहते हों। सन्तमत वाले सर्वाधार कहते हैं। गुरु नानक ने अकाल पुरुष कहा है। कोई-कोई सन्त संभवत: उसको अनामी पद कहते हों। वह शक्ति प्रत्येक जीव-जन्तु तथा रचना की आधार है। मैंने उसकी खोज की। अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि वह है किन्तु यह वर्णन करना कि वह क्या है कठिन है। उसका अनुभव नाम की प्राप्ति करने से होता है। वह नाम क्या है ?

प्रारम्भिक अवत्था में नाम—(कर्म इन्द्रियों की एकाग्रता का नाम है)। कोई प्राणी, जब तक सांसारिक व्यवहार में एकाग्रता से काम नहीं करता, दुविधा में रहता है अथवा मन लगाकर कार्य नहीं करता उसका भाग्य नहीं जागता है। मन लगाकर एकाग्रता से सांसारिक कार्य करने से भाग्य उदय होता है। इसी प्रकार अन्य कार्य बिना एकाग्रता के नहीं होते, किन्तु यह एकाग्रता कर्म इन्द्रियों की एकाग्रता हैं और यही विराट् पुरुष के खेल में भूलोक में सफलता और प्रसन्नता देती है। जो प्राणी अपने साँसारिक व्यवहार को पूर्ण ध्यान देकर नहीं करता वह कभी भी प्रसन्नता, सुख और आनन्द को जिसका सम्बन्ध कर्म इन्द्रियों से है नहीं प्राप्त कर सकता है। संसार में सफलता प्राप्त करने की यह एक मात्र विधि है और यही नाम का अंग है। मैंने इसी को पाँच नामों में से एक नाम समझा है। इसी को सहस दल कमल कहता हूँ। मेरे अनुभव में यही विराट् पुरुष कहलाता है।

जो प्राणी कर्म योग से बेसुध है और वाह्य जगत् में एकाग्र-चित होकर कार्य करते समय एकाग्रता को प्राप्त नहीं कर सकता वह किसी दशा में भी अपने अन्दर में

त्रिकुटी स्थान पर नहीं पहुँच सकता है। लाख कोई बातें बनाये किन्तु क्रियात्मक जीवन कोई और वस्तु है। सांसारिक व्यवहार करते समय जो कर्म इन्द्रियों को एकाग्र करके संसार को, शरीर को अथवा अन्य विचारों को नहीं भूल सकता है वह मेरी तुच्छ बुद्धि में अन्तरीय साधन नहीं कर सकता है। इसलिए ध्यान पर्वक सांसारिक व्यवहार को करना प्रथम सीढ़ी है। इस कर्म से प्रसन्नता और सफलता प्राप्त होगी। सबसे पहली बात है व्यायाम अर्थात् शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए कुछ न कुछ व्यायाम आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्य को उत्तम समझता हूँ। स्वयं सेवक का अर्थ है अपनी सेवा करना। वह प्रथम यही है कि अपनी कर्म इन्द्रियों को एकाग्र करो। यह एक रूप में व्यायाम है। दूसरे रूप में मन लगाकर सांसारिक व्यवहार करो। तुम्हारा भाग्य अवश्य बढ़ेगा अर्थात् तुमको प्रसन्नता, सुख और चैन मिलेगा।

नाम की द्वितीय अवस्था ज्ञान इन्द्रियों की एकाग्रता है। इसका तात्पर्य विचार, समझ और बुद्धि का बढ़ाना है। इसके लिए अपने-अपने कार्य के अनुसार उस प्रकार के व्यक्तियों से तथा पुस्तकों से सम्बन्ध रखो जिससे तुम्हारी बुद्धि, विचार और समझ बढ़े। पान्थिक जगत् में उसका नाम सत्संग है।

'बिन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।'

सच्ची समझ चाहे वह जीवन के किसी भी कार्य अथवा विषय के सम्बन्ध में हो वह तुमको प्रसन्नता देगी और अपने कार्य में सफलता देगी ; किन्तु जीवन का अनुभव बताता है कि यह कर्म इन्द्रियाँ और ज्ञान इन्द्रियाँ कुछ समय के पश्चात् निर्बल हो जाती हैं फिर प्राणी दुःखी और अशान्त

हो जाता है। इसके लिए अपने अन्दर एकाग्रता के लिए त्रिकुटी का स्थान है। अपना इष्ट बनाओ। इस इष्ट की मूर्ति अपने अन्दर प्रकट करना सीखो जिससे कि तुम्हारा मन अशान्ति, भ्रान्ति और भटकने से बच जाये।

मूर्ति जो बनाते हो उसमें तुमको विश्वास रखना चाहिए। बिना श्रद्धा और विश्वास के कार्य न चलेगा। यह त्रिकुटी स्थान है।

नाम की तृतीय अवस्था—मूर्ति के बन जाने के पश्चात् भी समय-समय पर शारीरिक और मानसिक या कर्म और ज्ञान इन्द्रियों की निर्बलता के कारण अशान्ति उत्पन्न होती रहती है। यह मेरा निज अनुभव है। जो ऐसा साधन करते हैं वह बेहतर जान सकते हैं।

इसलिए इस मूर्ति में प्रवेश करते-करते तुम्हारा मन तथा कर्म इन्द्रियों व ज्ञान इन्द्रियों का बोधभान छूट जायेगा। फिर तुम्हारा आत्मा, मन, बुद्धि, चित, अहंकार के बोधभान को त्याग कर अपने रूप का जो शब्द और प्रकाश है, हो जायेगा।

वहाँ न देह मन बुद्धि, चित और अहंकारा है।
वही दर असल आतम रूप तुम्हारा है ॥

जब प्राणी यहाँ पहुँच जाता है तो उसका भाग्य महान् उच्चतम हो जाता है। संसार का दुःख-सुख समाप्त हो जाता है। यह आत्मपद है और वह अपने संकल्प से अपना और दूसरों का भला कर सकता है।

अब नाम की चतुर्थ अवस्था—इस आत्मपद में रहने वाला पुरुष शरीर और मन के आवरणों के कारण समय-समय पर नीचे गिरता रहेगा; यद्यपि वह अत्यन्त उत्तम अवस्था है। इसलिए अपने आत्मपद को उसमें मिलाओ जिससे यह आत्मपद निकला है। वह है सत और अस्तित्व।

वहाँ जाकर आत्मा अपने आत्मतत्व को भूल जाता है और वह पूर्ण हो जाता है। उसकी शक्ति अति बलवान होती है। उसका संकल्प जो स्वाभाविक निकलता है वह प्रकृति का संकल्प होना चाहिए। सम्भवतः इसीलिए कहा गया हो।

'सन्त वचन को कोई न टारे, ईश्वर परमेश्वर सब हारे।'

यद्यपि इससे भी आगे और एक अवस्था है। वह नाम की प्राप्ति की पंचम अवस्था कहलाती है। वहाँ जाकर मनुष्य का जीवन अपरिमित दशा में लय होकर अस्तित्व को खो जाता है और वह स्वयं प्रकृति का पूर्ण रूप सर्वव्यापक सर्वाधार हो जाता है। यह अब मेरी अवस्था हो रही है :—

भाग जगा गुरु शरण में आया, वहाँ से नाम रतन धन पाया।
अंजाम यह हुआ कि अपना आप मिटाया, जहाँ से प्रगटा
उसमें समाया।।

परन्तु अभी मौज आधीन यह फकीरचन्द का शरीर, मन और आत्मा स्थित है। क्यों स्थित है? संसार के कल्याण हेतु।

चेतनता में आकर पुकार करता रहता हूँ किन्तु यह पुकार अपने अन्दर ही रहती है। कर्मभोग वश प्रकट करता रहता हूँ कि प्राणिमात्र का कल्याण हो।

यदि भारतवर्ष में परिवर्तन आ गया तो मेरा अनुभव ठीक है अन्यथा त्रुटि है। दीवानगी ही समझ ली जाये। जो मैंने समझा, अनुभव किया वर्णन कर दिया। आगे मौज मालिक

नाम की भिन्न-भिन्न दशाएँ अथवा अवस्थाएँ हैं। मैंने इनको भिन्न-२ प्रकार की एकाग्रताएँ समझा है और अन्तिम दशा एक ऐसी अवस्था है जहाँ मेरा अस्तित्व गुम होकर पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। अंश और पूर्ण का अध्यास समाप्त हो जाता है। इसलिए जीवन क्या है 'लब खुले और बन्द हुए। यह अनुभव तथा ज्ञान अन्तिम अवस्था है।

'करे करावै आप ही आप मानुष के नाहिं कुछ भी हाथ।'

यह मेरा अन्तिम अनुभव है। मालिक सबका कल्याण करे।

सत्संग परमसन्त
हजूर मानव दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

(गतांक दिसम्बर 86 के पृष्ठ 45 से आगे)

'चिन्ता त्याग त्याग दे चिन्ता, यही है सच्चा ज्ञान री।
गुरु पद का करु ले ध्यान री, मेरी सुरत सहेली ॥'

आप गुरुपद का ध्यान करो तो सही। उसको पूर्ण मानो वह अपने आप में पूर्ण है। तुम भी पूर्ण हो और वह भी पूर्ण है। अरे! उसकी पूर्णता को मानोगे तो तुम भी पूर्ण हो जाओगे। मैं आपको कह रहा हूँ कि आप पूर्ण हैं तो क्या चरण सिंह जी महाराज पूर्ण नहीं हैं? क्या मैं उनकी पूर्णता को नतमस्तक नहीं होऊंगा? कौन सा व्यक्ति है जिसके अन्दर वह अविनाशी नहीं है? किसको मैं नमस्कार नहीं करूं :—

'चिन्ता त्याग त्याग दे चिन्ता'

अपनी चिन्ता त्याग दो, अपनी चिन्ताओं को गुरु को दे दो, तुम्हारे सारे काम बनते चले जायेंगे। लेने वाला बड़ा होता है। लेने वाला कहता है :—

'फैज़ का दर है खुला, बन्द नहीं वो हरगिज़।
शर्त ये है कि कोई मांगने सायल आये ॥'

लोग कहते हैं गुरु नहीं मिलता। मैं कहता हूँ एक सच्चा शिष्य नहीं मिलता।

अब तुम चिन्ता कैसे त्यागोगे ?

गुरु पद का कर ले ध्यान री मेरी सुरत सहेली।'

गुरुपद का ध्यान करने से आपकी सारी चिन्ताएँ समाप्त हो जायेंगी। मैं आपको अपना अनुभव बताता हूँ।

सन् 1982 में यहाँ लोगों ने बड़ी गड़बड़ की थी। मुझे परदेसी ने बड़ी प्यारी चिट्ठी लिखी। मैंने उस चिट्ठी को जेब में डाला हुआ था। मैंने सोचा कि मैं परदेसी से बात करूंगा। और लोगों ने भी मुझे चिट्ठियाँ लिखीं। किसी ने लिखा कि फलाँ आदमी आपका विरोध कर रहा है। किसी ने लिखा कि पार्टीवाज़ी हो रही है। एक ने मुझे लिखा कि आप वैसाखी पर आकर ग़लती कर रहे हैं। आपको पता नहीं कि यह गद्दी है। यहाँ पर बन्दूकें चल जायेंगी, यहाँ पर यह हो जायेगा, वह हो जायेगा। अब मैं तो इसे गद्दी मानता नहीं। यह तो उत्तरदायित्व है। मैंने कहा कुछ नहीं पर मुझे विश्वास था :—

'गुरु तारेंगे हम जानी, तू सुरत काहे बौरानी।'

जब आप जानते हो कि गुरु तारेंगे तो आपको घबराना नहीं चाहिए। यहाँ पर जानने का मतलब समझना नहीं, बुद्धि नहीं, M.A., Ph.D. नहीं। जानने का मतलब है कि हमारी जान के अन्दर गुरु बैठा हुआ है। 'हम जानी' का मतलब है मेरे कण-कण के अन्दर, मेरे अणु-अणु के अन्दर गुरु रक्षा कर रहा है। मेरी बीमारी में रक्षा करता है, संकट में रक्षा करता है, तो मैं उस पर कैसे नहीं विश्वास करूँ ? तो हम 1982 की वैसाखी पर यहाँ आये। किसी ने माता जी को कह दिया कि आप महाराज जी से कहो कि उनके ग्रह खराब हैं और 15 दिन तक किसी से बात

न करें। मैंने सोचा—"गुरु तारेंगे हम जानी, तू सुरत काहे बौरानी" मुझे किसी का डर नहीं। मैं न तो परदेसी को जानता था, न डा. जौड़ा को जानता था, न नारायण दास को जानता था। मुझे किसी के बारे में कोई विशेष ज्ञान नहीं था कि यहाँ के लोग कैसे हैं लेकिन मुझे विश्वास था कि जब मैं किसी का नुकसान नहीं करूंगा तो मुझे भी कुछ नहीं हो सकता है। मैं तो महाराज जी की आज्ञा का पालन करने आया हूँ। एक व्यक्ति ने मुझे कहा कि आप ऐसा करो कि फलाँ आदमी कहता है कि वह सद्गुरु है तो आप उसको सद्गुरु मान लो। मैंने कहा कि महाराज जी ने मुझे आज्ञा दी है। आप मुझसे कहो कि मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं करूँ। जब मैं जानता हूँ कि वह सद्गुरु नहीं हैं तो मैं उनको सद्गुरु कैसे मानूं ? जब तक वह सत्संग सुनेंगे नहीं तब तक सद्गुरु नहीं बनेंगे। लेकिन जब मैं यहाँ आया तो एक ही दिन के अन्दर सब ने बड़े प्रेम के साथ कहा कि जैसा आप कहेंगे हम सब वैसा ही करेंगे। मैंने महाराज जी के इस कमरे में बैठकर अपने आपको गुरु के आगे समर्पित कर दिया। यह मेरा अनुभव है। आप भी जानते हैं, आप अनुभव करते हैं, अन्दर से सच्चे दिल से माँगने हैं। यदि आपको गुरु पर भरोसा है तो आप अवश्य सफल हो जाओगे :-

'चिन्ता त्याग, त्याग दे चिन्ता'

चिन्ता कैसे त्यागोगे ? अपने घर की सारी चिन्ताएँ मुझे दे दो। महाराज जी ने संकल्प करके एक सत्संगी के कर्म लिये थे या नहीं लिये थे ? यदि आप सारी चिन्ताएँ उस मालिक के हवाले कर दोगे तो निश्चित रूप से आपके अन्दर बैठा हुआ परमतत्त्व आपको सही रास्ता बतायेगा। 'चिन्ता त्याग' चिन्ता त्याग करने के लिए ही तो आपको

गुरु के सामने आत्म-समर्पण करना है। अपने आपको भूलना है। तुम अपने शरीर को, अपनी ताक़त को, अपनी विद्वत्ता को अपना आपा समझे बैठे हो लेकिन यह ग़लत है। यह सब ग़लत है, यह आपके काम नहीं आयेगा। जो गुरु के सामने समर्पित होने से आपकी चिन्ता दूर होगी वह और किसी से नहीं होगी। दाता दयाल जी ने दुबारा क्यों कहा :—

'चिन्ता त्याग, त्याग दे चिन्ता'

दाता दयाल जी महाराज कहते हैं यदि आपने अपनी चिन्ताओं को गुरु को दे दिया और गुरु को पूरी तरह समझ गये पर अभी तो आपने चिन्ता को ही त्यागा है जिस कारण से चिन्ता पैदा हुई उसको तो नहीं छोड़ा। उस कारण को छोड़ने का मतलब है कि आप जिस जीवन में रहते हो वह गृहस्थ है, उसको प्यार करो, गृहस्थ में रहते हुए गृहस्थ का अनुभव करो लेकिन उसमें फँसो नहीं :—

'भरोसा तेरा है तेरी आस मन में।'

यदि आपको भरोसा है तो आपके सारे काम आसानी से होते चले जायेंगे। इस भरोसे के लिए ही आपको सत्संग दिया जाता है। आपको बार-बार सत्संग सुनने की आवश्यकता है, यदि यह ज़रूरत नहीं होती तो महाराज जो मुझे आखिर में नहीं कहते "शर्मा! तू सचमुच ज्ञानमार्ग पर आ गया है, तू जीवन्मुक्त भी है, तू इस ज्ञानमार्ग से आगे जायेगा, तेरा वह समय भी आयेगा जब 'तू' या 'मैं' नहीं रहेगा। तेरी विदेहमुक्ति तब आयेगी जब तू इन सत्संगियों की सेवा करेगा।" मैं आपको सत्संग दे रहा हूँ। मैं उनका शिष्य हूँ। मैंने एक पूर्ण के सामने सिर झुका दिया। मैं उनको प्यार करता था और वह मुझे प्यार करते थे। वह मुझे इतना प्यार करते थे कि यदि मेरा कोई भी

रिश्तेदार मिलथे आता था तो एकदम कहते थे "अरे तू I. C. Sharma का भाई है ? तू भाग्य की बहन है ?" सत्संगियो ! यदि घर का एक भी आदमी सत्संगी होता है और गुरु का प्यारा है तो सारा खानदान गुरु का प्यारा हो जाता है।"तू सत्संग देना" आपको मन्दिर के बारे में उन्होंने कहा "मैंने को स्यापा पाया"। उन्होंने स्वयं कहा कि उन्होंने कोई भी ऐसा सत्संगी नहीं देखा जिसको वह सच्चाई बताते, सीधा रास्ता बताते। उन्होंने महसूस किया कि मुझे कोई सच्चा अधिकारी मिले जिसे मैं सच्चा ज्ञान दे जाऊँ और मैं उनको मिला। यदि वह इसे स्यापा समझते तो मुझे स्यापा क्यों देते ? मैं इसको स्यापा नहीं मानता। मैं समझता हूँ कि मेरे कई जन्मों के कर्म थे जिनके कारण मैं महाराज जो के पास आया। एक बार महाराज जी ने सभी लोगों से कहा "माँगो ! क्या माँगते हो ? जो कुछ मांगोगे वह सब मिलेगा।" किसी ने धन माँगा, किसी ने औलाद माँगी; किसी ने इज़्ज़त माँगी मगर मैंने कुछ नहीं माँगा लेकिन उन्होंने अपने आपको मुझे दे दिया। महाराज जी ने मुझे अमेरिका भेजा और कहा कि तू 8 साल वहाँ रह जा। अब मैं सोचता हूँ कि अगर मैं वहाँ नहीं रहता तो मुझे पेन्शन नहीं मिलती। उन्होंने लिखा "मेरी जगह I. C. Sharma काम करेगा।" अपने आपको ही मुझे दे दिया। अमेरिका में एक रात को उन्होंने डा. परसराम से कहा "परसराम ! मैं I. C. Sharma को क्यों लगा रहा हूँ ? इसमें राज है, इसमें भेद है। बहुत अभ्यासी हैं मेरे साथ, मेरे गुरु भाई हैं, कई मुझे प्यार भी करते हैं लेकिन मैंने उनको छोड़कर I. C. Sharma को काम दिया है।" महाराज जी कहा करते थे कि गुरु कुछ नहीं करता लेकिन उन्होंने खुद कहा मैं I. C. Sharma के अन्दर घुस रहा हूँ और अपना

बोला छोड़ने से पहले इसे अपना जैसा बनाकर जाऊंगा।" अब मैं यह नहीं कहता कि मैं वैसा बना। मुझे बनने की जरूरत नहीं। लोग महाराज जी से कहते थे कि मैं बन नहीं सकता। मैं कहता हूँ कि मैं बना क्या? मैं यह बना कि मैं बनता नहीं हूँ अर्थात् बनावट नहीं करता। उन्होंने मेरे सारे संस्कार बदल दिये। उस I. C. Sharma को जो पहले था उसे कहीं बाहर भेज दिया और अपने संस्कार भर दिये तो यह उनकी कृपा थी।

दाता दयाल स्वयं इस बात को कह रहे हैं :—

भरोसा तेरा है तेरी आस मन में।
लगा रहता हूँ तेरे सुमिरन भजन में॥

उस मालिक पर भरोसा रखो जो कुछ करो यह समझो कि करने वाला तो वही है :—

जो कुछ होगा मौज से होगा।
मौज को परख सुजान री॥

होगा तो मौज से। कहते हैं कि उसकी रज़ा (इच्छा) के बिना पत्ता नहीं हिलता। वह तुम्हारा काम चला रहा है। यदि तुमने अपने आपको उसकी शरणागत कर दिया है तो तुम्हारी जिम्मेवारी नहीं रहती। महाराज जी कहा करते थे कि मुझे पता नहीं कि मैं ग़लत कर रहा हूँ या ठीक कर रहा हूँ। यदि मैं ग़लत कर रहा हूँ तो इसमें मेरा क़सूर नहीं। क़सूर दाता दयाल जी महाराज तथा बाबा सावन सिंह जी महाराज का है जिन्होंने मुझे यह काम दिया। अरे काम तो आपके वो मालिक चला रहा है आप खाहमखाह में चिल्लाते हो कि हम चला रहे हैं। तुम कुछ नहीं हो, तुम तो सिर्फ नहर हो। नहर के अन्दर जो लहर चल रही, धार चल रही है वह धार मालिक की है। यदि तुम्हें पता ही नहीं है कि मैं नहर हूँ और मेरे अन्दर मालिक

की धार चल रही है तो तुम दुःखी रहोगे। अगर तुम्हें यह पता चल गया कि करने वाला परमतत्त्व है, मालिक है तो क्या होगा ? तुम्हारे सारे काम आसानी से, बिना परेशानी व रुकावट के होते चले जायेंगे।

तुम पहले ही परमतत्त्व हो अपने अन्दर के सभी दर्जों को पार करने के बाद भी अगर तुमने अपने आपको समर्पित नहीं किया, तो तुम परमतत्त्व भले ही हो लेकिन तुम दयाल देश नहीं जा सकते :—

जो कुछ होगा मौज से होगा,
मौज को परख सुजान री, मेरी सुरत सहेली।

मौज को समझो, परखो। जब मौज से ही सारा काम होना है तो अपने आपको मौज के हवाले क्यों नहीं करते ? आप अपने आपको मौज के हवाले करना नहीं चाहते। आप अपनी बीमारी भी देना नहीं चाहते हैं। ऐसे-२ कञ्जूस होते हैं कि अगर किसी को बुखार है और उनमे बुखार माँगो तो अपना बुखार भी नहीं देंगे। आप अपने को बेकार में कष्ट में डाल देते हो। अरे यह मार्ग सहज है, समाधि सहज है। आपको सत्संग में सहज ही ज्ञान होगा, सहज में ही मुक्ति होगी। आप कुछ भी न करो, मगर सब कुछ मौज से होगा। मैं कई बार सोचता हूँ कि मैं तो नहर हूँ। लहर तो उसकी है। मैं जब नहर को और नहर के किनारों को ढीला छोड़ देता हूँ अर्थात् अपने विचारों को ढीला छोड़ देता हूँ तो नहर अपने आप लहलहा उठती है। मैं जो कुछ बोल रहा हूँ वह मैं नहीं बोल रहा और कोई बोल रहा है। मैं जो भी कदम उठाता हूँ वह मैं नहीं उठाता कोई और उठाता है। अरे ये चमत्कार मैं नहीं कर रहा, ये तो अपने आप हो रहे हैं। अगर यह चमत्कार मैं कर रहा

होता तो मैंने अपने लड़कों को भी चमत्कारी बना दिया होता। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि 'मैं' ग़लत है यह नहर नहीं है जब नहर को ढीला छोड़ देता हूँ तो लहर इतनी ज़ोर की आती है, इतनी ज़ोर की आती है कि नहर खत्म हो जाती है और मौज ही रह जाती है। उसको परखो। तुम्हें अनुभव बतायेगा। तुम बिना अनुभव के नहीं बता सकते। मैं आपको एक मज़ाक की कहानी बता रहा था।

जोधपुर का महाराजा उम्मेद सिंह बड़ा बुद्धिशाली था। करीब 40 साल पहले की बात होगी कि काशी के ज्योतिषियों ने अखबार में छपवा दिया कि फलाने दिन ऐसे ग्रह एकत्रित होंगे कि प्रलय आ जायेगी। इस बात को पढ़ कर महाराजा उम्मेद सिंह ने भी 50 ज्योतिषियों की सभा बुलाई और कहा "काशी के ज्योतिषियों ने निकाला है कि फलाँ दिन ऐसे ग्रह होंगे कि प्रलय आ जायेगी। अब आप लोग अपना हिसाब लगाकर बताओ कि प्रलय होगी या नहीं।" सभी ज्योतिषियों ने हिसाब लगाया। कछ ने कहा कि प्रलय होगी लेकिन अधिकतर ज्योतिषियों ने कहा कि प्रलय नहीं होगी। महाराजा ने कहा "बस ठीक है। तो आप सब की राय है कि प्रलय नहीं होगी। क्या अब मैं यह बात अखबार में छपवा दूं कि मेरे जोधपुर के ज्योतिषियों ने कहा है कि प्रलय नहीं होगी ?" अब जिन ज्योतिषियों ने कहा था कि प्रलय नहीं होगी वो लोग कहने लगे "महाराज ! काशी के ज्योतिषी तो बड़े विद्वान् हैं अगर प्रलय हो गई तो हम लोग बदनाम हो जायेंगे।" महाराजा ने कहा "अरे बेवकूफो अगर प्रलय हो गई तो तुमसे पूछने कौन आयेगा ? और अगर प्रलय नहीं हुई तो तुम्हारा नाम हो जायेगा।"

तो मेरे प्यारे आँखों के तारे शंका किस बात की ? अब मौज से ही होगा तो चिन्ता कैसी ? इसलिए कहा है :—

'लगा रहता हूँ तेरे सुमिरन भजन में
यही है जतन और यही काम मेरा।
जपा करता हूँ रात दिन नाम तेरा ।।'

वह मालिक हरवक्त तुम्हारे अंग-संग है। तुम खाओ तो राधास्वामी के लिए, पीओ तो राधास्वामी के लिए। मैं कई बार कहता हूँ कि 9 बजे सो जाऊंगा मगर दुःखी आ जाते हैं बेचारे। मैं सोच लेता हूँ कि 11 बजे सो जाऊंगा। जैसी उसकी मौज। 11 बजे सो कर मौज फिर तीन बजे उठा देती है। रात-दिन वही शरीर चलाता है। गला खराब हो जाता है मगर सत्संग देने से ठीक हो जाता है। रात-दिन आप जो कुछ भी करो सब उसी के लिए ही करो। अगर यह बात आपकी समझ में आ जाये तो आपको अभ्यास की भी आवश्यकता नहीं है। महाराज जी कहते थे कि मैंने सारी उम्र अभ्यास किया मगर तुम लोगों को ज़रूरत नहीं है यदि आपको समझ में यह बात आ जाये कि 24 घण्टे सारे काम वही मालिक कर रहा है। उसी के भरोसे पर सारे काम होते हैं। तुम खाते वक्त राधास्वामी नाम लो, जागते वक्त राधास्वामी नाम लो तब तुम्हें पता लगेगा कि तुम्हारा जो असली रूप है वह इन सब दर्जों से आगे है, पहले भी था और अब भी है :—

तेरी मौज में रहके निशि दिन सुखी हूँ।
नहीं भय न चिन्ता न जग से दुःखी हूँ ।।

इस संसार में दुःख ही दुःख हैं। दुनिया में बहुत दुःखी लोग हैं। आपकी तरक्की को कोई देख नहीं सकता है। लोग ईर्ष्या करते हैं, द्वेष करते हैं, निन्दा करते हैं उनको करने दो :—

कबीर निन्दक न मरे जीवे आदि जुगाद।
हम तो सतगुरु पाइया निन्दक के परसाद ।।

क्यों निन्दक के प्रसाद ? जिधर जिसको सच्चा प्यार होता है अगर उसकी कोई बदनामी करता है तो उसका प्यार और भी बढ़ जाता है। सच्चा प्यार तो क्या दुनियावी प्यार में भी यही बात है। अगर दो व्यक्ति किसी से प्यार करते हैं चाहे वह स्त्री-पुरुष हैं, या वह दोनों ही पुरुष हैं, लेकिन जब उन पर गलत तोहमतें लगाई जाती हैं तो उनका प्यार और भी बढ़ जाता है। मीरा का प्यार बढ़ा कि नहीं बढ़ा ! मीरा को सब बुरा कहते थे, बावला कहते थे :—

लोग कहे मीरा भई बाबरी,
सास कहे कुल नासी रे ।
ज़हर का प्याला राजा भेजा,
पीवत मीरा हासी रे ।
पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे ।

जितनी मीरा की बदनामी की गई उतना ही उसका प्यार कृष्ण में बढ़ा। उसने सब कुछ छोड़ दिया और अन्त में कबीर साहिब की तरह से ही उसका शरीर गायब हो गया। मीरा वहीं पहुँची जहाँ कबीर साहिब पहुँचे। तो यह समझने की बात है कि आप हर समय पूरी तरह से उसी का काम कर रहे हो तो आपका कभी नुकसान नहीं होगा :--

"खुली आँख से तेरा दर्शन जो पाया।
मिटे सहज में मान मद मोह माया।"

जब अन्दर की आँख खुल गई तो आप देखोगे कि सभी परमतत्व हैं। फिर किसी से छल नहीं करोगे, ईर्ष्या, नफरत नहीं करोगे और आपके सहज में ही मान, मद, मोह, माया समाप्त हो जायेंगे।

आपका शरीर मेरे से अलग हो सकता है। आपका मन मेरे से अलग हो सकता है। अब मेरे को बर्फी अच्छी लगती है, किसी को साग अच्छा लगता है, किसी को करेले

अच्छे लगते हैं यदि इन सब चोज़ों को मिला दिया जाये तो क्या कोई खा सकता है ? कोई भी नहीं खा सकता है। इसलिए मन अलग होना चाहिए। आजकल विवाह होते हैं लड़के कहते हैं कि लड़की मेरे जैसी होनी चाहिए। अब सोचो कि लड़का सितार जानता है और लड़की भी सितार जानती है दोनों यदि सितार बजाने लगेंगे तो बेवकूफों के कुनबे का सत्यानाश हो जायेगा। घर कौन चलायेगा ? अगर तुम खर्च ज़्यादा करो और पत्नी भी करे तो एक दिन आर्थिक समस्या आ जायेगी इसलिए मन तो अलग ही होना चाहिए और है भी अलग।

एक सुरत है। सुरत सबकी एक है। आप प्यार सुरत से करते हो। तो मन अलग होते हुए भी, मनमुटाव होते हुए भी, लड़ाई होते हुए भी, विरोध होते हुए भी आपका प्रेम नहीं जायेगा। यदि तुम्हारी पत्नी क्रोध कर रही है अरे उसे ब्लड-प्रैशर है तुम उससे क्रोध मत करो। तुम तो उसकी आत्मा से प्यार करते हो शरीर या मन से थोड़े ही प्यार करते हो। तो यह बात समझने की है :—

खुली आँख से तेरा दर्शन जो पाया।
मिटे सहज में मान मद मोह माया॥

मान, मद, मोह; माया है नहीं। महाराज जी कहते थे कि मुझे उस घर का पता लग गया मगर ठहरा नहीं जाता। जब मैं महाराज जी की आज्ञा का पालन करने लगा तो शुरू-२ में दो घण्टे बैठने पर ही मेरी टाँगों में दर्द हो जाता था लेकिन अब आठ-२ घण्टे बैठा रहता हूँ। आप प्यार करते हो तो मैं भी आपके प्यार से अभिभूत होकर घण्टों-२ बैठा रहता हूँ और सब कुछ भूल जाता हूँ। अब मैं देखता हूँ कि जिन कामों को करने के लिए मुझे बाहर जाना पड़ता था अब वह सारे काम घर बैठे ही हो

जाते हैं। मैंने आपको पहले भी बताया था कि मैं बहुत सोशल था यूनिवर्सिटी मेरे पर निर्भर थी। जब मैं काम से देहली आता था तो अपनी साली शोभा के यहाँ ठहरता था। देहली में एक आलोक जैन बड़े अमीर आदमी हैं वह मुझे अपनी कार दे देते थे। मैं सुबह नाश्ता करके निकलता और सारा दिन इन्दिरा गाँधी से कभी विश्वविद्यालय में मिलता, कभी किसी से मिलता, कभी किसी से मिलता। रात को घर आता था। उस समय यह ज़िन्दगी थी हालाँकि महाराज जी की शरण में आ चुका था। यह जो सब करता था वह मैं अपना कर्त्तव्य करता था। तुम अपना कर्म करते जाओ। उसी में तुम पूर्ण हो जाओगे। सन् 1982 में मैं अमेरिका से देहली आया और अपनी साली शोभा के घर ठहरा था। अब मैं तीन दिन कमरे के बाहर नहीं निकला। सत्संगी आते रहे मुझसे मिलते रहे। शोभा कहती है अरे हमारे जीजाजी कहाँ चले गये। जो सारा दिन टेलीफोन पर और कार पर बैठे रहते थे।" मैंने कहा "बेटा बात यह है कि जो काम कार पर जाने से होता था अब घर बैठे ही हो जाता है।" मैं आपको सही बात कह रहा हूँ। आप उसकी मौज में रहो और अपने आपको उस मालिक की इच्छा पर छोड़ दो फिर देखो आपके सारे काम घर बैठे ही हो जायेंगे। मैं जब यहाँ आया तो कहा :—

गुरु तारेंगे हम जानी ।
तू सुरत काहे बौरानी ।।
न जोगी न साधु न ज्ञानी बना मैं ।
न भोगी असाधु न मानी बना मैं ।।

जो बनेगा वह बिगड़ेगा। अब न तो हम बन सकते हैं न अब बिगड़ सकते हैं। जब कबीर ने कह दिया :—

जो कुछ किया सो हरि किया भयो कबीर-कबीर।

सच्चाई तो यही है। महाराज जी ने एक सत्संग में कहा कि मैंने कई लोगों को नामदान देने की पदवी दी है लेकिन वह सब के सब ऐसे निकृष्ट निकले कि जब कोई सिद्धि-शक्ति आई तो वह गलत रास्ते पर चले गये। सब के सब मुझे भूल गये। सिर्फ एक कमालपुर वाली माई है जो सच्ची है। तो बन गये न। मैं सब कुछ बनने की बात कह रहा हूँ। अगर किसी आदमी ने यह समझ लिया कि हम बन गये तो वहाँ सब मामला समाप्त हो जायेगा। तुम कुछ नहीं करते करने वाला तो वही मालिक है :—

न कुछ किया न कर सका, न करने योग्य शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर कबीर ॥

जो था पहले अब भी वही रूप मेरा।
न व्यापा मुझे काल का हेरा फेरा ॥

आपके अन्दर जो असली रूप है वह मौजूद है केवल आपको बता देना है। जब आपको यह पता चल गया कि मैं तो अविनाशी हूँ, बदलता शरीर है, बदलता मन है, आत्मा जन्म लेती है लेकिन मेरा जो अविनाशी तत्त्व अंश है वो वैसा का वैसा ही रहता है तो फिर आप काल के चक्कर में कभी नहीं आओगे। काल में रहते हुए भी आप काल से आज़ाद रहेंगे जैसे कमल का फूल पानी में रहते हुए पानी से अलग रहता है वैसे ही आदमी काल से अलग रहता है :--

न जागा न सोया न सुषुप्ति में आया।
न आशा निराशा के भय ने सताया ॥

जागते समय आदमी सोचता है कि यह मेरा शत्रु है, मुझे यह गाली दे रहा है, कोई निन्दा कर रहा है; कोई मेरा विरोध कर रहा है लेकिन जब आप गहरी नींद में सुषुप्ति में चले जाते हो तो क्या आपको पता होता है कि

मेरा कोई शत्रु है, या मेरा कोई विरोध कर रहा है या किसी ने मुझे गाली दी ? उस समय केवल आनन्द की अवस्था होती है। वो आनन्द, सुख जिसको आप ढूंढने जा रहे हो, आपके अन्दर मौजूद है। बाकी जो जगत् की बात है उसमें सुख नहीं है। चाहे आप इस जगत् के अन्दर पैसे वाले हो जायें, चाहे दो-2 मोटर आ जायें, चाहे एक दिन में आप मिनिस्टर बन जायें लेकिन इन सब चीज़ों में आनन्द नहीं है आनन्द के लिए ही सोना पड़ता है। आनन्द तुम्हारे अन्दर मौजूद है। इसीलिए कहा :—

न जागा न सोया न सुषुप्ति में आया।

यह उससे ऊपर की चीज़ है जो आनन्द के अन्दर भी अचेतन अवस्था के अन्दर भी जागती रहती है इसलिए यह रास्ते के स्टेशन हैं, मञ्ज़िल नहीं :—

न दौड़ा न बैठा न लेटा कभी मैं।
न माता-पिता और न बेटा कभी मैं॥

यह एक मुक्ति की चीज़ है। माता-पिता की आज्ञा का पालन करना बहुत ज़रूरी है। अगर आप माता पिता की आज्ञा का पालन करोगे तो फलोगे-फूलोगे। मेरी माता जी जब बीमार पड़ी तो मैंने उनकी बहुत सेवा की और मैं समझता हूँ कि उसी सेवा से मुझे जीवन में सफलता मिली। यहाँ पर इसका मतलब यह नहीं कि आप घर वालों से सम्बन्ध या रिश्ता छोड़ दें। अरे जागते हुए भी सुरत मौजूद थी, लेटे हुए भी सुरत मौजूद थी वह तो कभी न जागी, न सोई, न दौड़ी, न बैठी। वह तो हर समय मौजूद है। यह शरीर का सम्बन्ध है माता से, इसलिए वह मेरी माता है। शरीर से सम्बन्ध है, मन से सम्बन्ध है लेकिन सुख तो एक है और वह अलग है उसका किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए दाता दयाख जी महाराज ने कहा :—

न माता - पिता और न बेटा कभी मैं।
नहीं ब्रह्म माया का है द्वन्द मुझको ।।
न उलझा सका कर्म का फन्द मुझको।
सहज रूप है और सहज कर्म बानी ।।
सहज में सहज की सहज हो निशानी ।।

राधास्वामी मत की यह विशेषता है कि आपको सहज में ही मञ्ज़िल पर ले जायेगा। आपको कुछ करना-धरना नहीं पड़ेगा। आप केवल सत्संग सुनते जाओ, सुनते जाओ सुनते जाओ आपको सहज में ही ज्ञान हो जायेगा। आप जो कुछ भी काम कर रहे हो उस काम को करते जाओ। उसी के अन्दर आपको सहज में अपना स्वरूप नज़र आ जायेगा। तुम गुरु की केवल आज्ञा का पालन करते जाओ। महाराज जी कहा करते थे कि दाता दयाल जी महाराज ने कहा कि तुम्हे सच्चा सद्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा इसलिए तुम सत्संग देते चले जाओ। उन्होंने एक नमूना कायम किया :—

सहसदल अनेक और त्रिकुटी की त्रिपुटी।
दशा द्वैत की सुन्न में भी प्रगटी ।।

जब सुमिरन, ध्यान, भजन किया जाता है तब ये अन्दर के अनुभव होते हैं यहाँ तक भेद है, मतभेद है लेकिन सुरत रहेगी। महाराज जी कहते थे "सब कहते हैं कि आत्मा तुम्हारे अन्दर है। आत्मा फैले हुए परब्रह्म जग के अन्दर और सबके अन्दर मौजूद है लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि भई जब वह सब जगह मौजूद है तो क्या उसका कोई स्थान नहीं है ? यह किसी ने नहीं बताया।" मगर सन्तों ने आकर बताया कि जो चीज सब जगह मौजूद है वह एक जगह ठहरी हुई भी है। जैसे सूर्य का प्रकाश सारी पृथ्वी पर है, नक्षत्रों पर है लेकिन सूर्य एक जगह टिका हुआ भी है।

सन्तों ने बताया कि जो ताक़त तुम्हारे सारे शरीर को

चला रही है वह मालिक की धार है जो बह रही है और उस धार का सैण्टर या केन्द्र कहाँ पर है ? यह किसी ने नहीं बताया। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वो धार अगर नीचे की तरफ बहेगी तो उससे तुम नीचे आओगे और यदि तुम उस धार को ऊपर की तरफ ले जाओगे तो तुम उस धार के आधार से अर्थात् मालिक से मिल जाओगे। यह धार राधा है और राधा का स्वामी भी तुम्हारे अन्दर मौजूद है। सन्तों ने बताया कि यह धार जो तुम्हारी सुरत है, जो राधा है यदि उसको नीचे की ओर रहने दोगे तो देवी-देवताओं में रहोगे और आपको फिर जन्म लेना पड़ेगा और फिर इस जीवन के अन्दर सुख-दुःख दोनों भोगने पड़ेंगे और यदि आप इस धार को ऊपर ले जायेंगे तो आप आवागमन के चक्कर से छूट जाओगे। इस धार को, राधा को ऊपर ले जाने का रास्ता बताने वाला गुरु है और गुरु ऐसे स्थान पर ठहरे हुए हैं :--

नाव पड़ी मझधार में तेरी खेवट सतगुरु पूरा।
नाम सुमिर जा भवजल पारा जो माया रन सूरा ॥

आपकी नाव मझधार में है। यह धार है। नीचे भी जा सकती है और ऊपर भी जा सकती है। सन्त क्यों कहते हैं कि तुम देवी-देवताओं को मत मानो। वो इसलिए कहते हैं कि तुम्हारी धार नीचे चली जायेगी :--

नाव पड़ी मझधार में तेरी, खेवट सतगुरु पूरा।

जिसने खुद अभ्यास करके; सद्गुरु की कृपा से अपनी धारा को अर्थात् राधा को स्वामी से मिला दिया हो, वही आपको रास्ता बता सकता है लेकिन आपकी नाव को किताबी ज्ञान वाला नहीं पार कर सकता है। मेरे ऊपर महाराज जी की बहुत कृपा रही। मेरा अभ्यास भी था और मुझे ज्ञान भी था लेकिन सद्गुरु ने बता दिया कि आपकी धारा

जो है वह राधा है :—

स्वामी बैठक अद्भुती, राधा निरखनहार ।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ।।

तुम अभी तक धारा हो। तुम्हें यह पता नहीं है कि यह धार नीचे की तरफ बह रही है। इस धारा को उल्टा कर दो, तब तुम देखोगे कि इस जगत् के अन्दर प्रपंच है, झूठ है, नफरत है। इस जगत् के अन्दर जो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हैं, ये सब कल्पित हैं, ये कुछ नहीं हैं। इनके ऊपर को तरफ रास्ता है :—

'उल्टा मारग सन्त मता है।'

जब तुम ऊपर की तरफ जाओगे तब स्वामी से मिलोगे। तब तुम्हें यह अनुभव होगा कि इस जगत् के अन्दर कोई किसी का नहीं है। प्यार सब से करो लेकिन किसी पर निर्भर मत रहो। सब आदमी धोखा दे जाते हैं, सब रिश्तेदार धोखा दे जाते हैं। दुनिया में स्वार्थ भरा पड़ा है :—

सुर नर मुनि सब की यह रीति।
स्वारथ वश करिहैं सब प्रीति ।।

केवल सद्गुरु ही है जिसमें स्वार्थ नहीं है। परम दयाल जी महाराज ने हमको भेद बता दिया। क्या भेद बताया ? कि जब तुम राधा बनोगे तभी ऊपर जा सकते हो। क्या तुम्हें राधा बनने की जुस्तजू है ? क्या तुम्हारे अन्दर यह कुरेद है कि मैं उस मालिक से जाकर मिलूँ जहाँ से मैं आया हूँ ? मैं उसी से प्यार करूँ। जब तुम्हारे अन्दर यह कुरेद होगी तपन करारी होगी तब तुम ऊपर की तरफ जाओगे।

ऊपर दर्जे हैं। सहस्रदल कमल हज़ारों पंखुरियों वाला विराट् फूल फैला है उसके पीछे एक ज्योति काम कर रही है। इस ज्योति की तरफ ध्यान दो जो ज्योति निरंजन है।

ज्योति निरंजन, ज्योति निरंजन कहना नहीं है समझना है। तुम समझो कि ज्योति है। पंचनाम बुरे नहीं हैं लेकिन उनको समझना है। उनको समझ कर जपो। ज्योति निरंजन क्यों है? क्योंकि एक ज्योति है तुम्हारा मन। तुम्हारा मन एकाग्र हो जाये। इस जीवन के अन्दर अनेक किस्म के रिश्ते हैं लेकिन सभी को राम के नाते समझिये :—

'मानिये सकल राम के नाते।'

अभ्यास करने के बाद में आपकी यह रीति होनी चाहिए कि आप सबके साथ हिलमिल कर रहें लेकिन उनमें फँसें नहीं।

सहस्रदल कमल के बाद त्रिकुटी है। त्रिकुटी का लाल मुकाम है और इसमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव—भक्त, भक्ति और भगवान् —यह रास्ता है। ये सब रास्ते के अन्दर के दर्जे हैं। यह मञ्ज़िल नहीं है :—

'सहसदल अनेक और त्रिकुटी की त्रिपुटी।'

सहस्रदल के बाद आप त्रिकुटी में पहुँचे वहाँ आपकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है। त्रिकुटी में आप गुरु के रूप से या प्रकाश के आगे जो कुछ माँगते हैं वह आपको मिल जाता है। मैं आपको अपना अनुभव बताता हूँ। जब मैं सन्तमत में नहीं था और महाराज जी को भी कभी सुना नहीं था तो जब कभी मेरे आगे समस्या आती थी और मैं जब समाधि ध्यान में बैठता था तो मुझे प्रकाश दिखाई देता था। उस प्रकाश के समय मैं जो कुछ इच्छा करता था वह पूरी हो जाती थी। यह बिलकुल सच्ची बात है। इसलिए त्रिकुटी के लाल मुकाम पर जब आपको प्रकाश दिखाई देगा उस समय आप जो कुछ माँगेंगे वह मिल जायेगा लेकिन यह भी मञ्ज़िल नहीं है :—

'दशा द्वैत की सुन्न में भी न प्रगटी'

तो धीरे-२ आप अन्दर जायेंगे । त्रिकुटी में गुरु होता है और शिष्य होता है और यहाँ पर गुरु शिष्य का सम्बन्ध होता है । आगे चलकर के इतना अधिक प्रेम बढ़ जाता है कि जब सुन्न की अवस्था में जाते हैं तो उसमें दो ही रह जाते हैं—एक गुरु और दूसरा शिष्य और दोनों प्यार करते हैं । लेकिन इस सुन्न की हालत में भी रहना मञ्जिल नहीं है । यहाँ पर द्वैत है । द्वैत की भी भक्ति है । सन्तमत में पूरी भक्ति है जो इससे आगे बढ़ाकर महासुन्न में ले जाती है :--

महासुन्न अद्वैत का भाव छूटा ।
भँवर में नहीं काल माया ने लूटा ।।

महासुन्न की अवस्था में क्या होता है ? कि गुरु और शिष्य एक हो जाते हैं, द्वैत का भाव समाप्त हो जाता है । आप सत्संग में आते हैं गुरु को प्यार करते हैं । पहले द्वैत का भाव जरूरी है । यदि आप सुन्न की अवस्था में नहीं रहे तो महासुन्न में नहीं जाओगे । व्यास के अन्दर जो सेवा होती है, वह ठीक होती है । आपको मक़सद समझना चाहिए । गुरु की शारीरिक सेवा बहुत ज़रूरी है । इस सेवा से आदमी गुरु के बहुत नज़दीक रहता है । महाराज जी ने दाता दयाल जी की कितनी सेवा की, तभी तो उनके अन्दर का परमतत्त्व निखरा । गुरु की शारीरिक सेवा होनी चाहिए ।

इस प्रकार महासुन्न में अद्वैत का भाव समाप्त हो जाता है । गुरु और शिष्य एक हो जाते हैं । जब गुरु और शिष्य एक हो जाते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे मस्ती ही मस्ती है ।

इस मस्ती की हालत को वेदान्ती कहता है कि हमारी समाधि पूरी हो गई और हम असली घर पहुँच गये । अरे भई अभी तो तुम भँवरगुफा में भी नहीं गये । अभी तो

महासुन्न में ही हो। बेदान्ती गलत है। सन्त ठीक कहता है। इससे आगे जाना है। आगे जाकर आपने देख लिया कि अद्वैत में दो नहीं हैं। लेकिन दो नहीं है भी एक अलग बात है क्योंकि सुन्न, महासुन्न के बाद जब भँवरगुफा में जाते हैं तो वहाँ पर फिर प्रकृति और पुरुष दोनों हैं। ब्रह्म और माया है। मैं आपको एक-एक बात बताना चाहता हूँ। शंकराचार्य अद्वैतवेदान्ती थे। अब दाता दयाल जी ने तो सच्चाई बताई। बुद्ध ने कहा कि भई जिसको तुम आत्मा मानते हो वह आत्मा नहीं है। उनका इशारा सुरत की तरफ था। जब उनके शिष्य आगे चले तो उन्होंने कह दिया कि जो वास्तविकता है; वह शून्य है, महाशून्य है। उन्होंने एक निराशावादी दृष्टिकोण दिया। सभी भिक्षुक और भिक्षुणी बनने लगे। मालिक ने देखा कि अरे भारत में तो संन्यास-वाद हो जायेगा। तब मालिक ने शंकराचार्य को भेजा। शंकराचार्य ने कहा भई "यह शून्य नहीं है। शून्य का मतलब कुछ नहीं है लेकिन मालिक पूर्ण है। इसलिए शून्य-२ मानना गलती है।" लेकिन शंकराचार्य के जो आगे चलने वाले उत्तराधिकारी थे उन बेवकूफों ने कहा कि यह निर्गुण है। अब निर्गुण का मतलब तो यह हुआ कि हम उससे बात नहीं कर सकते। लेकिन दयाल, सन्तमत, राधास्वामी मत कहता है कि अरे शून्य के बाद में जहाँ कुछ नहीं दिखाई देता है उसके आगे सोहम् देश है। सोहम् देश के अन्दर ब्रह्म भी है और माया भी है, दयाल भी है और काल भी है। दोनों का बीच है। तुम्हारा एक-२ साँस सोहम ले रहा है यह ध्वन्यात्मक शब्द है। सोहम् का अर्थ है 'मैं वो हूँ'। मैं माया नहीं हूँ। जो लोग सोहम् में फँस जाते हैं वे कभी माया में होते हैं और कभी ऊपर जाते हैं। इसलिए उसे भँवर-गुफा कहते हैं। गुरु की कृपा से ही इससे आगे जाते हैं।

इसलिए कहा :—

'भँवर में नहीं काल माया ने लूटा'।

भँवरगुफा के आगे सत्तलोक है। सत्तलोक में न एक है, न अनेक है केवल सत्पुरुष का दर्शन है। उस समय सत्त की अवस्था होती है। सत्त में अलख और अगम हैं। जैसे हमारे शरीर, मन और आत्मा हैं और ये नाशवान् हैं क्योंकि शरीर बदलता है, मन बदलता है, आत्मा फिर जन्म लेती है। लेकिन शरीर, मन, आत्मा के पीछे जो चौथा तत्त्व केन्द्र है वो अविनाशीतत्त्व पुरुष है। जैसे इस जगत् के अन्दर शरीर स्थूल है, मन स्थूल है और आत्मा को भी स्थूल कह देते हैं क्योंकि आत्मा का तो आनन्द है। जब सुरत सत्तलोक में पहुँचती है तो उस समय हम अपने स्वामी के साथ मिल रहे होते हैं। सत्तलोक में प्रकाश ही प्रकाश है। वो प्रकाश जो शब्द का पुञ्ज है और वह दयाल का, परमतत्त्व का आत्मिक स्थूल शरीर है। सत्तलोक में पहुँच कर आप अमर तो हो जायेंगे लेकिन अभी आत्मिक स्थूलता में ही दिखाई देता है। यहाँ गुरु भी दिखाई देता है। गुरु मौजूद होता है। अब इससे आगे जाना है। जब सत्पुरुष के बाद अलख देश में अलख पुरुष के पास जाते हैं तो वहाँ अलख के अन्दर शब्द ज़्यादा है, प्रकाश कम है। अलख शरीर परमतत्त्व का आत्मिक सूक्ष्म मानसिक शरीर है। अलख के आगे अगम है। अगम के अन्दर शब्द ही शब्द है और ऐसा शब्द है जिसको बयान नहीं किया जा सकता है। वह मालिक का आत्मिक कारण शरीर है।

इस जगत् के अन्दर नाशवान् कारण शरीर इस दृष्टि से है कि आत्मा बार-२ बदलती है। उसके अन्दर 'मैं' होती है और सुरत उसका आधार है। तो ये अलख, अगम जो हैं, ये मालिक के वैसे ही शरीर हैं जैसे वो आत्मिक शरीर है।

इसके बाद है अनामी और दयाल। दयाल पुरुष है, परम पुरुष है। वह एक धुँधली चीज नहीं है जिससे आप सम्पर्क ही नहीं कर सकते हो। वह पुरुष है और दयाल पुरुष है। यही कारण है कि तुम कितने भी दुःख में क्यों न हो तुम शरीर में हो, मन में हो, चौरासी में हो जब तुम प्रार्थना करोगे तो वह तुम्हारी प्रार्थना सुनेगा और तुम्हें काल देश से दयाल देश में ले जायेगा। ये सब दर्जे हैं इसलिए आखिर में क्या कहा :—

अलख हूँ अगम हूँ अनामी बना मैं ।
कहूँ कैसे कैसा कहाँ और क्या हूँ ।।

इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। अलख में भी मैं हूँ, अगम में भी मैं हूँ, अनामी में भी मैं हूँ। दयाल अनामी में आया इसलिए राधास्वामी नाम दिया गया। राधास्वामी निजनाम है। उसके अन्दर सभी नाम मौजूद हैं। जितने भी दर्जे हैं सब उसी से निकले हैं। मैं तुम्हें कहाँ तक बताऊँ। गीता के दसवें अध्याय में अर्जुन ने कृष्ण से पूछा "महाराज! मैं कौन-कौन सी अवस्था में आपको याद करूँ ?" कृष्ण ने कहा "तुम्हें क्या बताऊँ! यदि तुम नदियों का ध्यान करो तो गंगा समझ लो। मुनियों का ध्यान करो तो कपिलमुनि समझ लो, योद्धाओं का ध्यान करो तो अर्जुन समझ लो। चन्द्रमा के अन्दर मैं प्रकाश हूँ, सूर्य के अन्दर मैं तेज हूँ। मैंने एक बूंद मात्र से इस सारे जगत् को बनाया है।" गीता में पूरा सन्तमत है। तो ये सब अलख, अगम, अनामी—मैं आपको क्या बताऊँ। मैं सब कुछ हूँ और कुछ भी नहीं हूँ :-

गुरु राधास्वामी ने आकर चिताया ।
मेरा रूप मुझको सहज में लखाया ।।

इन कड़ियों में सन्तमत की वास्तविकता है। इसीलिए राधास्वामी मनुष्य बन करके, सन्त बन करके, मानव बन

करके, स्वयं आ रहा है। आपको कुछ करना-धरना नहीं है। बस, सत्संग पर आते रहो, सत्संग सुनते रहो। सत्संग सुनते-सुनते एक दिन तुम अवश्य ऊपर चले जाओगे। तुम जो भी काम करते हो उस काम को करते रहो उसी से तुम ऊपर चले जाओगे। महाराज जी कहते थे कि मुझे सत्संगियों के रूप में सद्गुरु मिला। अरे, तुम व्यापार करते हो तो तुम्हें व्यापार में मिलेगा, तुम पढ़ाते हो तो तुम्हें विद्या मे मिलेगा। यह बहुत सहज रास्ता है। राधास्वामी ने आकर इसे सरल कर दिया।

स्वामी जी महाराज से जो परम्परा चली है और जो सन्त आ रहे हैं, वो आपको सहज में बतायेंगे। वो क्या बतायेंगे उनको बताना पड़ेगा। वो नहर है। लहर अपने आप चलती है। आगे से आगे चलती है और जो कुछ पहले था वह सब उसके अन्दर मौजूद होता है और सन्त उससे एक कदम आगे ले जाता है।

मैं कुछ और नहीं कहना चाहता। इतना कह सकता हूँ कि मैंने जो कुछ कहा अन्तस् से कहा है, सच्चे दिल से कहा है। मैं नहीं जानता कि किसने कहलवाया है। यह सत्संग आज मैंने आपको गुरुपूर्णिमा के दिन दिया है। मैं समझता हूँ कि आपकी श्रद्धा, आपका प्यार बहुत है। वास्तव में आप सद्गुरु के सद्गुरु हैं। मैं अपने गुरु की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ एक-2 कदम पर कर रहा हूँ।

इन शब्दों के साथ मैं आज का सत्संग समाप्त करता हूँ।

सबको राधास्वामी !

मासिक सन्देश

परमसन्त हजूर मानव दयाल

डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मेरे परम प्रिय सत्संगियो !

राधास्वामी; परम दयाल जी सहाई !

20 अगस्त को हम सायंकाल हवाई जहाज़ से क्लीव-लैण्ड से वाशिंगटन डलास हवाई अड्डे पर पहुँच गये। वहाँ पर डा. बौब मैकीवन औरलिकटन वर्जीनिया से हमें लेने के लिए आये हुए थे। बौब औरलिकटन वर्जीनिया में अपनी पत्नी जूड़ी के साथ एक बड़े शानदार फ्लैट में रहते हैं। उनकी पत्नी अमेरिका की राज्य सभा के सदस्य श्री ईगलटन के दफ्तर में उच्च अधिकारी भी हैं। ये दोनों पति-पत्नी मानवता मन्दिर के प्रति बड़ी आस्था और श्रद्धा रखते हैं। इनके घर पर ही दो और तीन अगस्त 1986 को साधना शिविर और सत्संग आयोजित किये गये थे। बौब ने तो परम दयाल जी महाराज का आशीर्वाद भी प्राप्त किया हुआ है। इन दोनों ने मेरे से नामदान भी लिया हुआ है। पहली बार बौब और जूड़ी नवम्बर 1984 में 32 अमेरिकनों के उस शिष्टमण्डल के साथ भारत आये थे जो A.R.E. (खोज और ज्ञान की संस्था) के द्वारा आयोजित हुआ था। इसी

संस्था में ही परम दयाल जी महाराज ने 1972, 1976, 1978 और 1980 में वर्जीनिया बीच नगर में विशाल सत्संग दिये थे। इसी नगर में ही परम दयाल जी महाराज 1976 से 1980 तक हमारे उस मकान पर ठहरते रहे जो अभी तक भी हमने बेचा नहीं है। A.R.E. एक विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जिसके सदस्य विश्व में फैले हुए हैं। ये अधिकतर बुद्धिशाली, प्रोफेसर, इञ्जीनियर, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश आदि हैं। परम दयाल जी महाराज ने मार्च 1969 में इस संस्था के शिष्टमण्डल को क्लैरीजिज़ होटल देहली में सत्संग दिया था जो "A world to Americans" (अमेरिकन लोगों से वार्त्तालाप) नामक पुस्तक में प्रकाशित है।

इन कारणों से A.R.E. के 50 हज़ार सदस्यों में परम दयाल जी महाराज और उनके विचारों के प्रति अगाध श्रद्धा है। यह संस्था मानवता मन्दिर के सहयोग से विश्व में सच्ची मानवता फैलाने में लगी हुई है। परम दयाल जी महाराज की शताब्दी पिछले वर्ष इसी संस्था में मनाई गई थी। इस संस्था के सभी सदस्य जिनमें ईसाई धर्म के पादरी और यहूदी धर्म के पुरोहित भी शामिल हैं पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त को मानते हैं।

श्री बौब और उनकी पत्नी जूडी A.R.E. संस्था के द्वारा आयोजित भारत यात्रा करने के लिए नवम्बर 1984 में 32 अमेरिकन सदस्यों के साथ एक शिष्टमण्डल में आये थे। वैसे तो श्री बौब मुझे कई वर्षों से जानते थे और उन्होंने परम दयाल जी महाराज के दर्शन भी किये हुए थे किन्तु इस यात्रा में वह मेरे बहुत निकट आ गये थे और उन्होंने नामदान भी लिया था। इन्हीं कारणों से 21 और 22 अगस्त को उनके घर पर ठहर कर और 23 अगस्त को

कोलम्बिया मेरीलैण्ड में दिन भर का साधना शिविर लगाकर हम 23 रात को ही क्लीयरवाटर फ्लोरिडा पहुँच गये। यहाँ पर रात्रि को एक बजे यानि कि 24 अगस्त प्रातः 1 बजे हमें श्रीमती रुथबुश हवाई अड्डे पर लेने के लिए आई हुई थीं। श्रीमती रुथबुश बहुत ही श्रद्धालु और प्रेममयी महिला हैं इनका सम्पर्क साहित्यिक शिष्य के नाते भी मेरे साथ बहुत पुराना है। 1976 में परम दयाल जी महाराज भी इनके घर पर ठहरे थे। मैंने इन्हें नामदान भी दिया है। हालाँकि श्रीमती रुथबुश बहुत सम्पन्न नहीं हैं किन्तु हर बार मेरे फ्लोरिडा के दौरे पर ये दिल खोलकर व्यय करती हैं। यह एक श्रद्धालु गुरुमुख हैं इन्होंने ही 1981 में कर्नल ऐशले को कहा था कि उनकी लाइलाज बीमारी में मैं ही उनकी सहायता कर सकता था और परम दयाल जी की कृपा से ऐसा हो हुआ था। 29 अगस्त तक हम क्लीयरवाटर और सैरासोटा के इलाके में रहे। इस दौरान में तीन सत्संग हुए जिनमें से एक वैनस फ्लोरिडा में डा० टैरी फिरीडमैन की संस्था में एक चर्च आफ् ट्रुथ गिरजाघर में सेण्टपीटर्सबर्ग में और एक श्रीमती रुथबुश के घर पर क्लीयरवाटर में हुआ। इसी दौरान में हम कुछ घण्टों के लिए श्री जौन मिलर और उसकी पत्नी मार्शा मिलर के घर पर प्लाण्ट सिटी में भी गये। इन्हीं की सुपुत्री सैण्डा परम दयाल जी महाराज की इतनी श्रद्धालु भक्त थी कि उसने परम दयाल जी महाराज की महासमाधि लेने के अन्दर-2 13 बर्ष की आयु में चोला छोड़ दिया। इस सम्बन्ध में किसी और मासिक सन्देश में इस आध्यात्मिक घटना की व्याख्या करूंगा। यूँ तो सिद्ध सत्तपुरुष फकीर बाबा की पुस्तक के अन्तिम अध्याय में इस विचित्र घटना को विस्तारपूर्वक लिखा गया है। यह पुस्तक आत्मा राम एण्ड सन्स कश्मीरी

गेट देहली ने प्रकाशित की है। यह केवल 6 रुपये में मानवता मन्दिर होशियारपुर में या किसी भी सत्संग पर मिल सकती है।

हम प्लाण्ट सिटी में जौन और मार्शा मिलर के उस बड़े कारखाने पर गये जहाँ उनकी कम्पनी मौरजान का कार्यालय भी है। इस कारखाने में हज़ारों टन शाकाहारी भोजन, पनीर और दही आदि हर सप्ताह डिब्बों में बन्द करके फ्लोरिडा के सारे प्रान्त में बड़े-बड़े ट्रकों में भेजा जाता है। उनका यह व्यापार परम दयाल जी महाराज के आशीर्वाद से फलीभूत हुआ है। उन्होंने हमें ग्लोरिया और रुथ को अपने घर पर भोजन दिया और उसी दिन हम क्लीयरवाटर वापिस आ गये।

29 अगस्त प्रातःकाल 10 बजे मैं अकेला क्लीयर-वाटर से वायुयान द्वारा एटलाण्टा जार्जिया पहुँचा, वहाँ पर हवाई अड्डे पर जौन और सूजन फर्गूसन मुझे लेने के लिए आये हुए थे। उनकी कार के द्वारा हम 4 घण्टे के अन्दर क्लाइड उत्तर कैरोलीना पहुँच गये। उनके घर पर 7 बजे सायं से लेकर 10 बजे तक सत्संग और प्रीतिभोज हुआ। इस अवसर पर 50 के लगभग नये सत्संगी सम्मिलित हुए। दूसरे दिन प्रातःकाल 9 बजे से 3 बजे तक यूनिटी गिरजाघर में साधना शिविर लगा। इसमें बहुत लोगों ने भाग लिया और कई नये सत्संगी मानवता मन्दिर से सम्बन्धित हो गये। उसी रात को मैं हवाई जहाज़ के द्वारा डेढ बजे अर्थात् 31 अगस्त प्रातः 1 बजे क्लीयरवाटर पहुँचा।

पहली सितम्बर को मैं और भाग्य माता जी प्रातःकाल 8 बजे टैम्पा (क्लीयरवाटर का सबसे बड़ा हवाई अड्डा) से पैन अमेरिकन हवाई जहाज़ से रवाना होकर करीब 3 हज़ार मील की उड़ान के बाद सायंकाल 7 बजे वैस्टइण्डीज

के देश ट्रिनीडाड की राजधानी पोर्ट आफ स्पेन पहुँचे। यहाँ पर हमें बाहर निकलने में बहुत समय लगा किन्तु हमें तसल्ली इस बात की थी कि मेरे परमप्रिय और परम दयाल जी के सबस अधिक श्रद्धालु और त्यागी सत्संगी विश्वामित्र हमारे सामने बाहर खड़े हुए थे। वह हमें तुरन्त अपनी कार के द्वारा सैनफरनाडो नगर में अपने निवास स्थान पर ले गये। उनकी पत्नी श्रीमती शान्ति देवी, उनकी दो पुत्रियाँ और एक सुपुत्र हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। इनके अलावा विश्वामित्र मराज के ससुर और शान्ति देवी के पिता मोती लाल जी भी हमारे सत्संग के लिए वहीं ठहरे हुए थे। इससे पहले कि मैं इस प्रेममय आदर्श मानवमय भक्त परिवार के सम्बन्ध में आपको कुछ बताऊँ यह कहना आवश्यक है कि श्री मराज का यह विशाल भवन जिसमें दो एकड़ के करीब बगीचा भी लगा है एक पहाड़ी पर ऐसा स्थित है कि सौ गज की दूरी पर अन्ध-महासागर का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। जब प्रातःकाल मैं उठा इस सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर और मालिक की विशाल प्रकृति के प्रसार को देखकर बरामदे में रखी हुई कुर्सी पर समाधि में बैठ गया। एक घण्टे के बाद मैं और श्री विश्वामित्र कुछ समय के लिए बगीचे में घूमते रहे और बाद में हम दोनों ने आधे घण्टे के लिए समाधि का आनन्द लिया।

11 बजे से ही श्री विश्वामित्र के सम्बन्धी और मित्र दूर-२ से सत्संग के लिए पहुँचने लगे। दिन भर आने-जाने वालों का ताँता लगा रहा। सायंकाल 6 बजे से सत्संग शुरू हुआ। दो सौ के लगभग व्यक्ति सम्मिलित हुए। मेरे सत्संग शुरू होने से पहले श्री विश्वामित्र के ससुर मोती लाल जी ने मेरा परिचय दिया और सत्संग के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

इस सत्संग में हिन्दु, मुस्लिम और ईसाई श्रोता सम्मिलित थे। मैंने इस सत्संग में राधास्वामी शब्द की

व्याख्या की और सुरत-शब्द योग की व्यापकता बताते हुए कहा "सनातन धर्म में, इस्लाम धर्म में, यहूदी धर्म और ईसाई धर्म में भी यह योग मौजूद है।" इस व्याख्या का प्रभाव यह हुआ कि सत्सग के बाद एक ईसाई मेरे पास आया और उसने कहा कि दूसरे दिन जब मुझे पोर्ट आफ स्पेन शहर में ट्रिनीडाड की राजधानी में हिन्दु मन्दिर में सत्संग देने के लिए जाना था, मैं उससे पहले आधे घण्टे के लिए ईसाई धर्म के एक समूह को भी सत्सग दूं। इसी प्रकार सैन फर्नेण्डो की एक हिन्दू संस्था के अध्यक्ष ने मुझसे आग्रह किया कि मैं दूसरे दिन प्रात: उनके उस कृष्ण मन्दिर को देखने जाऊँ जो निर्माणाधीन था। मैंने इन दोनों माँगों को पूरा किया। कृष्ण मन्दिर वालों ने कहा कि भविष्य में वे मेरे आने का खर्चा देंगे और कृष्ण मन्दिर में मानवता धर्म के सत्संगों का आयोजन करेंगे। इसी प्रकार ईसाइयों की संस्था ने भी मेरे सत्संगों के आयोजन के बारे में आग्रह किया और मेरे आने का खर्चा देने का भी वचन दिया। संक्षेप में मेरे इस दो दिन के दौरे के अन्दर ट्रिनीडाड में तीन नये केन्द्र स्थापित हो गये—(1) कृष्ण मन्दिर का (2) ईसाई संस्था का और (3) विश्वामित्र के घर में मानवता धर्म का। दूसरे शब्दों में परम दयाल जी महाराज की शताब्दी का विदेशी दौरा नये केन्द्र स्थापित करने की दृष्टि से सफल रहा। 3 सितम्बर को प्रात:काल ट्रिनीडाड से रवाना होकर हम पुन: क्लीयरवाटर फ्लोरिडा पहुँचे।

4 सितम्बर को मैं अकेला डलास, टैक्सास रवाना हुआ और भाग्य माता जी क्लोवलैण्ड के लिए रवाना हुईं। डलास में प्रो० डा० सावा के घर पर एक गोष्ठी आयोजित की गई थी जिसमें उस नगर के प्रतिष्ठित प्रोफेसर और बुद्धिजीवी सम्मिलित हुए। यह गोष्ठी 4 सितम्बर सायंकाल 7 बजे

से 10 बजे तक चली। यहाँ पर डा० सावा के बारे में कुछ विस्तारपूर्वक लिखना सत्संगियों के लिए लाभदायक होगा। मैं यह बताना चाहता हूँ कि डा० सावा जो एक विद्वान् इञ्जीनियरिंग के Ph. D. हैं, मेरे सम्पर्क में कैसे आये।

जैसे मैंने आपको इसी मासिक सत्संग में बताया है कि 1984 में A.R.E. का 32 व्यक्तियों का शिष्टमण्डल भारत में आध्यात्मिक भ्रमण के लिए आया था जिसमें बौब मैकीवन भी सम्मिलित थे। मुझे इस शिष्टमण्डल के साथ बहुत जगहों पर इसलिए जाना पड़ा क्योंकि पंजाब की स्थिति के कारण इस शिष्टमण्डल को मैंने वचन दिया था कि वे सुरक्षित रहेंगे। जब इस शिष्टमण्डल को चण्डीगढ़ से दलाई लामा को मिलने के लिए धर्मशाला जाना था उस समय मैंने अपने प्रिय डा० चन्द्र नगेश नेगी को इसलिए साथ ले लिया था कि यदि अमेरिकन यात्रियों में से कोई पानी के बदलने के कारण अस्वस्थ हो जाये तो वह उनकी चिकित्सा कर सके। वास्तव में ऐसा ही हुआ। करीबन 20 सदस्यों को रास्ते में पानी के बदलने के कारण उदर रोग हुआ। डा० चन्द्र नगेश नेगी ने एक-2 गोली देकर उन्हें स्वस्थ कर दिया। यहाँ पर यह भी बता देना आवश्यक है कि डा० चन्द्र नगेश नेगी परम दयाल जी महाराज के अत्यन्त श्रद्धालु शिष्य स्वर्गीय डा० A. C. Negi के सबसे छोटे पुत्र हैं और आचार्य विजय नरेश नेगी D.I.G. पुलिस के सबसे छोटे भाई हैं।

सभी अमेरिकन यात्रियों ने डा० नेगी से घनिष्ठ सम्बन्ध कर लिया। सभी उनसे प्यार करने लगे। जब वे लोग अमेरिका चले गये उनके मन में डा० नेगी की याद बनी रही। प्रो० डा० सावा एक विशेष हृदय के रोग से ग्रस्त थे। वह बौब मैकोवन के परममित्र हैं। डा. सावा

जन्म से रूस के रहने वाले हैं लेकिन इस समय अमेरिका के नागरिक हैं। जब बौब मैकीवन भारत से वापिस लौटे तो डा. सावा ने उनसे पूछा "क्या भारत में कोई अच्छा डाक्टर है जो मेरे रोग का इलाज कर सकता हो ?" बौब मैकीवन ने हाँ में उत्तर देते हुए कहा कि डाक्टर चन्द्र नगेश नेगी ही उनके रोग की चिकित्सा कर सकेंगे। इसलिए उन्होंने डा. साबा को डा. नेगी का बटाला (पंजाब) का पता लिख कर दिया।

जब चन्द्र नेगी ने डा. सावा का पत्र पढ़ा और उनकी बीमारी के सम्बन्ध में विचार किया तो उसने उत्तर में डा. सावा को लिखा "मैं अपने आप में कुछ नहीं हूँ परमसन्त मानव दयाल Dr. I. C. Sharma जी महाराज परमतत्त्व के अवतार हैं मैं सिर्फ उन पर भरोसा रख कर ही चिकित्सा करता हूँ। उनकी दया से मेरी चिकित्सा कामयाब हो जाती है और मरीज़ अच्छे हो जाते हैं। वह मालिके कुल हैं और आजकल वह अमेरिका में आये हुए हैं। मैं आपको उनका पता लिखकर भेज रहा हूँ, आप उनको मिल लें। वह दृष्टि से ही आपकी बीमारी को दूर कर देंगे।" उस बार मैं जून के महीने तक अमेरिका में रहा और जुलाई के आरम्भ में गुरुपूर्णिमा के लिए वापिस होशियारपुर आ गया। जब डा. सावा ने मेरे बड़े लड़के डा. अरुण के घर पर टैलीफोन किया, मैं भारत जा चुका था।

सौभाग्यवश उसी बर्ष मुझे नवम्बर के महीने में अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन के लिए 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 1985 तक न्यूजर्सी U.S.A. में रहना पड़ा। मैं इसके बाद क्लीव-लैंड में डा. अरुण के घर काफी दिन तक रहा। एक सप्ताह के लिए मैं निवाडा और कैलीफोर्निया सत्संग के लिए गया और 7 दिसम्बर को वापिस क्लीवलैंड आ गया। उसी दिन

डा. सावा डलासटैक्सास से हवाई जहाज़ पर क्लीवलेंड आया और 4 दिन तक हमारे घर में रहा। मैंने उसे समाधि ध्यान की दीक्षा दी और उसके पेट के रोग के लिए प्रसाद भी दिया। एक ही दिन में डा. सावा गहन समाधि में चले गये। जब मैं भारत वापिस आ गया तो वह मेरे साथ पत्र-व्यवहार करते रहे और मुझे लिखा कि उनका स्वास्थ्य ठीक हो गया है। इसी कारण 4 सितम्बर को मैं इनके घर पर डलास में ठहरा और बुद्धिजीवियों के छोटे से ग्रुप में आध्यात्मिक प्रवचन दिया।

5 सितम्बर को प्रात:काल 7-30 बजे मैं डलास हवाई अड्डे से रवाना होकर कैलिफोर्निया के हवाई अड्डे सानफ्रांसिसको पर 11-30 बजे प्रात:काल पहुँचा। यहाँ पर मेरा प्यारा श्रद्धालु शिष्य माईक मोहरिक मुझे रीनो नवाडा ले जाने के लिए आया हुआ था। हम तीन-चार घण्टे सानफ्रांसिसको नगर में रहे, वहाँ एक शाकाहारी भोजनालय में भोजन किया और मन्दिर के टेपरिकार्ड के लिए कुछ छोटे कैसिट खरीदे। हम दोपहर को रीनो के लिए रवाना हो गये किन्तु हमें रास्ते में चण्डीगढ़ के रहने वाले श्री भट्टी के घर पर कैलीफोर्निया की राजधानी में रुकना था। श्री भट्टी ने एक सैकरोमैण्टो अमेरिकन महिला से विवाह किया हुआ है जिसका नाम सूजन है। मुझे यह देख कर प्रसन्नता हुई कि सूजन अपने पति और अपने ससुराल वालों से वैसा ही प्यार करती है जैसा कि एक भारतीय नारी के लिए उचित होता है। यहाँ पर हमनें शाम का भोजन किया। जिसमें सूजन के माता-पिता भी सम्मिलित हुए। भोजन के बाद धार्मिक चर्चा हुई जिसमें मैंने राधा-स्वामी मत की व्याख्या की। सूजन और उसके माता-पिता भी मेरे विचारों से सहमत थे। हम करीबन 8 बजे वहाँ से

रवाना होकर 10 बजे तक रीनो माइक मोहरिक के घर पहुँच गये।

दूसरे दिन बहुत से लोग मुझे मिलने के लिए माइक के घर आये। हमारा अधिकतर समय इन लोगों के साथ व्यक्तिगत सत्संग में बीता। 7 सितम्बर को एक बड़े होटल के प्रांगण में 10 बजे से सत्संग और साधना शिविर आरम्भ हुआ। यह आयोजन भी परम दयाल जी महाराज की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में था। इसलिए माइक ने सारे कार्यक्रम की वीडियो फिल्म बनाई। जो कभी भारत के सत्संगियों के लिए भी दिखाई जायेगी। मैंने कभी शब्द का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि जो वीडियो फिल्म अमेरिका में बनाई जाती हैं वह भारत में तब तक नहीं दिखाई जा सकती जब तक कि उसे खास मशीन के द्वारा बदल नहीं दिया जाता।

उसी दिन मैं 5 बजे सायंकाल हवाई जहाज़ के द्वारा रीनो शहर से पाँच सौ मील दूर लौसैन्जल्स (Las Angles) नगर के हवाई अड्डे पर पहुँचा। कैलीफोर्निया राज्य में यह नगर अत्यन्त विशाल और सुन्दर है। इसी नगर से जुड़ा हुआ हॉलीवुड नगर है, जो विश्व में सबसे बड़ा फिल्म निर्माण का केन्द्र है। विश्वभर से लोग हॉलीवुड के इलाके में फिल्म निर्माण के सबसे बड़े यूनीवर्सल स्टूडियो (Universal Studio) को देखने के लिए जाते हैं। हॉलीवुड के फिल्म उद्योग में काम करने वाले अभिनेता और अभिनेत्रियाँ विश्वभर में सबसे अधिक धनाढ्य होते हैं। इनका जीवन इतना व्यस्त और भौतिकता से भरपूर होता है कि वे अपनी समृद्धि से दुःखित हो जाते हैं। यदि उनको कोई आध्यात्मिक दिशा न मिले तो वे आत्महत्या भी कर लेते हैं। करीब 28 वर्ष पूर्व हॉलीवुड की एक अभिनेत्री मैरीलिन मनरो जो विश्व में सबसे सुन्दर मानो जाती थी अपने अभिनय के कारण सर्वोत्तम अभिनेत्री

साषित हुई। वह अरबपति हो गई। विश्व के बड़े से बड़े ख्याति व्यक्ति उससे सम्पर्क करना चाहते थे और कुछ तो अरबपति व्यक्ति उससे विवाह भी करना चाहते थे। उसकी ख्याति, उसका सुन्दर रूप, उसकी धन-सम्पत्ति, उसका कला-कौशल और उसका मधुर स्वभाव होते हुए भी उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति न मिला जो उससे प्यार के लिए प्यार करता। उसने महसूस किया कि जो लोग उससे प्यार करना चाहते थे वे दुनियावी थे और उससे विवाह करने के बाद भी उसको आनन्द और शान्ति नहीं दे सकते थे। अन्त में जगत् की इस निष्ठुरता और पुरुषों की कामवासना से दुःखित होकर उसने युवावस्था में आत्महत्या कर ली। मैं यह सब बातें प्रसंगवश लिख रहा हूँ। क्योंकि जो संस्कृति भौतिक-वाद में सबसे आगे बढ़ जाती है उसी को रूहानी रास्ता दिखाने की ज़रूरत होती है। ऐसे समृद्धिशाली सांसारिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न लोग ही अन्दर में दुःखी होकर सच्चे दिल से मालिक या सद्गुरु की तलाश में लग जाते हैं। अमेरिका के लोगों में मालिक को मिलने की ज़बरदस्त तड़प है।

लेकिन उनको ऐसे सच्चे रास्ता दिखाने वाले की जरूरत है जो निःस्वार्थ हो, निर्बन्ध हो और पैसे के लालच से प्रेरित होकर उनको ग़लत रास्ते पर न चलाये। परम दयाल जी महाराज ने मुझे 1968 में लिख दिया था, "तुम अमेरिका में सिर्फ दर्शनशास्त्र पढ़ाने नहीं गये हो। तुम्हें विश्व-विद्यालयों में शिक्षा देने के साथ-२ अमेरिका के लोगों को रूहानियत की भी शिक्षा देनी होगी। अमेरिकन लोग रूहानियत के रास्ते पर बहुत तेजी से आयेंगे। जब एक आदमी दिनभर सख्त मेहनत करके शरीर को थका देता है उसे रात को बहुत गहरी नींद आती है। इसी तरह से

अमेरिका के लोगों ने भौतिकता में बहुत ज्यादा तरक्की कर ली है और उन्होंने दुनियावी सुखों को बहुत भोगा है। अब वे रूहानियत की तरफ बहुत तेज़ी से आयेंगे।" मैंने इसीलिए आपको इस मासिक सन्देश में हॉलीवुड की ज़िन्दगी के बारे में कुछ जानकारी दी है।

लौसैन्जल्स का हवाई अड्डा विश्वभर में सबसे बड़ा और सबसे सुन्दर है। यहाँ पर डेढ़ मिनट में दो हवाई जहाज़ उतरते और चढ़ते रहते हैं। इस हवाई अड्डे पर पचासों अलग-२ हवाई कम्पनियों के हवाई अड्डे हैं इसलिए एक हवाई जहाज़ से उतर कर दूसरे हवाई जहाज़ पर चढ़ने के लिए मीलों दूर जाना पड़ता है। हवाई जहाज़ से उतरते ही Jet पुल के ज़रिया मैं सीधा हवाई भवन के अन्दर पहुँच गया। हवाई अड्डे का यह हिस्सा भी बहुत बड़ा है हज़ारों यात्री अलग-२ हवाई कम्पनियों के हवाई जहाज़ों पर चढ़ते-उतरते हुए चारों तरफ दिखाई दे रहे थे, ऐसा लग रहा था कि लोग किसी मेले पर इकट्ठे हो रहे हैं। इस हवाई अड्डे पर 24 घण्टे ऐसा ही मेला लगा रहता है। मैंने जब पूछताछ के दफ्तर से पता किया कि मेरी वैंम्टर्नईगल की सैण्टामेरिया को जाने वाली उड़ान कहाँ से जायेगी, तो मुझे कहा गया कि आप करीब आधा मील दूर जाकर नीचे उतरें और वहाँ बरामदे में एक दफ्तर से पता कर लें कि कौन सी बस द्वारा आपको कौन से दूसरे हवाई भवन पर पहुँचना है। जैसे मैंने पहले कहा है कि इस हवाई अड्डे में पचासों कम्पनियों के हवाई जहाज़ चलते हैं। हरएक के अपने-२ हवाई भवन हैं जिन्हें अंग्रेज़ी में Air Terminal (एयर टरमिनल) कहते हैं।

हरएक हवाई भवन भी कई बार एक मील लम्बा होता है। मुझे उसी हवाई भवन में नीचे के बरामदे तक

जाने के लिए करीबन दो फर्लांग गतिमान् पथ (चलते हुए रास्ते) पर खड़े होकर जाना पड़ा। इस चलते हुए रास्ते को अंग्रेज़ी भाषा में Walk way कहते हैं। यह चलता हुआ रास्ता तीन फुट चौड़ी पटरी होती है जिसके दोनों तरफ हिफाज़त के लिए ही छोटी दीवारों जैसी जिनके ऊपर रेलें लगी हुई होती हैं, चलती रहती हैं। उनके साथ-२ जिस पटरी पर हम खड़े होते हैं वह चलती रहती है। मनुष्य नहीं चलता, पटरी चलकर उसे काफी फासले पर पहुँचा देती है। ज्यों ही मैं चलते हुए रास्ते से उतरा तो नीचे जाने के लिए मुझे चलती हुई सीढ़ी पर सवार होना पड़ा। इस चलती हुई सीढ़ी को अंग्रेज़ी भाषा में Escalator (एसकेलेटर) कहते हैं। एसकेलेटर वो चलती हुई या गतिमान् सीढ़ी होती है जो नीचे से ऊपर को या ऊपर से नीचे को बिजली द्वारा चलती रहती है। एसकेलेटर से उतर कर ज्यों ही मैं एक बड़े बरामदे में नीचे पहुँचा तो एक व्यक्ति ने मुझे इशारा करते हुए कहा "आप सामने प्लेटफार्म पर सी नम्बर की बस से अमेरिकन ईगल के हवाई भवन पर चले जाइये।" मैंने ऐसा ही किया। अमेरिकन ईगल के काउण्टर पर ही मैंने अपना सूटकेस हवाई जहाज़ पर भेजने के लिए दिया। टिकट मेरे पास मौजूद थी। हवाई जहाज़ को चलने में आधा घण्टा रहता था। मैं 5 मिनट में ऐसकेलेटर से ऊपर जाकर दूसरे चलते हुए रास्ते से ठीक फाटक पर पहुँच गया। वहाँ 8, 9 और मुसाफिर बैठे हुए थे। जिस हवाई जहाज़ से हमने जाना था वह नीचे खड़ा हुआ दिखाई दे रहा था। वो केवल 15 मुसाफिरों का हल्का सा जहाज़ था क्योंकि मैं पहले भी ऐसे जहाज़ पर सैण्टामेरिया से लौसैन्जल्स तक पिछले वर्ष आ चुका था इसलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। अन्तर केवल इतना था कि यह

रात का समय था जब कि पहले मैंने इन छोटे हवाई जहाजों में दिन-2 में सफर किया था। थोड़ी देर में उड़ान की सूचना सुनकर हम ज़ीने से उतर कर हवाई जहाज़ में बैठ गये। हम कुल बारह यात्री थे। हवाई जहाज़ इतना छोटा था कि उड़ने से पहले हवा से जूझ रहा था। मैंने देखा दो मुसाफिरों का चेहरा उतर गया। शायद वे पहली बार ही इतने छोटे से हवाई जहाज़ में यात्रा कर रहे थे। उनमें से एक मेरे पास ही बैठा था। जब हवाई जहाज़ धीरे-2 आकाश में उड़ा तो वह यात्री और भी घबराया। मैंने उसे तसल्ली दी और कहा यह यात्रा बिलकुल सुरक्षित होगी। आप बिलकुल चिन्ता न करें। इस प्रकार बातचीत करने से वह यात्री प्रसन्न हुआ। मैं जिस खिड़की के पास बैठा था वह पश्चिम की ओर खुली थी। मैंने जब उसमें से झाँका तो शीशे के अन्दर से ही कोई पाँच सौ फुट ऊपर मुझे अर्धचन्द्र दिखाई दिया। उसके नीचे ऐसा लगा कि 15 फुट के फासले पर ही वो सितारा चमक रहा था जो हमेशा चन्द्रमा के निकट दिखाई दिया करता है। यह दृश्य बहुत ही सुहावना था। वास्तव में चन्द्रमा क्षितिज में था। ज्यों-2 हमारा हवाई जहाज़ ऊपर उठता गया, चन्द्रमा नीचे ही नीचे होता गया। जब हवाई जहाज़ बहुत ऊँचा चढ़ा तो चन्द्रमा और सितारा बहुत नीचे हो गये। जब हमारा हवाई जहाज़ छोटे-छोटे नगरों के ऊपर उड़ रहा था तो वह सितारा उन शहरों की बत्तियों से ऐसा मिल गया और मुझे ऐसा लगा कि वो उन बत्तियों में से एक है। लेकिन जब हवाई जहाज़ नगर के ऊपर से निकल कर जंगल में उड़ता था तो नगर की बत्तियाँ गुम हो जाती थीं, और वो सितारा चन्द्रमा का साथ देता हुआ सुहावने दृश्य को बनाये रखता था। करीब 45 मिनट

तक मैं इस सुन्दर दृश्य को देखता रहा। कुछ ही मिनटों के अन्दर सैण्टामेरिया नगर की जगमगाती हुई बत्तियाँ दिखाई दीं और हमारा छोटा सा हवाई जहाज़ धीरे-2 हवाई अड्डे पर उतरा। ज्यों ही मैं हवाई जहाज़ से उतर कर हवाई अड्डे के भवन में आया, तो डा. सुरेश लोढ़ा को मेरे इन्तज़ार में खड़े हुए पाया। मैं डा. सुरेश लोढ़ा के घर पर ही रुकने के लिए आया था।

वहाँ पर सत्संगियों की सूचना के लिए डा. सुरेश लोढ़ा के बारे में कुछ बता देना ज़रूरी है। सुरेश उदयपुर के लोढ़ा वंश के सदस्य हैं। उन्होंने जयपुर मैडीकल कालिज से M.D.B.S. की उपाधि लेकर इंग्लैण्ड में उच्च शिक्षा प्राप्त की और कई वर्षों तक वहाँ डा. नियुक्त रहे। जब मैं क्लीवलैंड में प्रोफेसर होकर आया उन्हीं दिनों सुरेश अमेरिका आ गये थे और क्लीवलैंड में एक बड़े अस्पताल में प्रशिक्षण ले रहे थे। इन्होंने सभी परीक्षाएँ पास कर ली थीं और अमेरिका के कानून के मुताबिक अस्पताल में नौकरी करने या अपने निजी अस्पताल खोलने के अधिकारी हो गये थे किन्तु इनके पास अमेरिका में स्थायी रूप से रहने का प्रमाणपत्र नहीं था। 1978 में ही परम दयाल जी महाराज क्लीवलैंड में आये। डा. सुरेश लोढ़ा ने उनका खास आशीर्वाद लिया। हालाँकि डाक्टरों के लिए स्थायी रूप में रहने की इजाज़त अमेरिका में सम्भव है फिर भी डा. सुरेश लोढ़ा को अमेरिका में स्थायी प्रमाणपत्र मिल गया। इसके बाद सुरेश मेरे सम्पर्क में रहा और मेरे परामर्श से 1984 के अन्त में सैण्टामेरिया चला गया। वहाँ इसने अपना निजी चिकित्सालय खोला। आज डा. सुरेश लोढ़ा सैण्टामेरिया का प्रतिष्ठित डाक्टर है। इस बार जब मैं

उसके घर ठहरा तो मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सुरेश का मानवता मन्दिर में विश्वास और भी दृढ़ हो गया है।

समय न होने के कारण मैं सैण्टामेरिया में सत्संग न दे सका। दूसरे दिन लौसैञ्जल्स ठहर कर और डा. विद्या सागर के घर पर सत्संग देकर 9 सितम्बर को मैं क्लीवलैंड पहुँच गया। वहाँ से 12 सितम्बर को रवाना होकर 14 सितम्बर प्रातःकाल 3 बजे मैं बम्बई पहुँच गया। समय और स्थान के अभाव से 'तपः' की व्याख्या अगले मासिक सन्देश में दी जायेगी।

सबको राधास्वामी और सद्भावना!

—आपका फकीरमय

महाराज जी के नाम पत्र

नई दिल्ली
10-11-86

सर्वाधार स्वामी,

आपके पवित्र चरण-कमलों में सिर झुका कर प्रणाम !

सलवान स्कूल में जो तीन दिन का सत्संग का प्रोग्राम था, आप ने उसमें परम दयाल जी महाराज के दर्शन दिये और ऐसा लगा कि बहन साधना नहीं बल्कि माँ भण्डारो की आवाज़ है। किसी प्रकार से कोई अन्तर नहीं था। आप ने अपनी दया की वही गंगा फिर से बहा दी जो कि हज़ूर परम दयाल जी फरमाते थे कि चाहे इस गंगा में हाथ-मुँह धोवो या नहा लो, या डुबकियाँ लगा लो।

एक बार, मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब मैं होशियारपुर मानवत मन्दिर के हाल में अकेला उनके पास था, तो महाराज जी ने अपनी अपार कृपा से फरमाया :—

"बच्चा, जब लकड़ी जल जाती है तो आग और उसमें कोई फर्क नहीं रह जाता। इसी तरह मुझे अपने में और उस मालिक में कोई फर्क नज़र नहीं आता।"

इन्हीं शब्दों को मेरे लिए अपने सत्संग में आप ने दूसरे रूप में कहा और मेरे जो भ्रम थे, उन्हें दूर कर दिया। इस के लिए आपका सदा आभारी रहूँगा।

जज साहिब ने सभा का Vice President बना दिया है। मेरी उन से प्रार्थना यह थी कि एक सेवादार या सिपाही के रूप में जो काम चाहें ले लें। और यही प्रार्थना मैंने अपने विचारों द्वारा सच्चे दिल से आप से की थी। यह भी आप ने ही दया की है। मैं तो अब तक यह जानता हूँ कि न मुझमें बल है, न बुद्धि। जो काम करवाना है उसके लिए सच्चाई और शक्ति आप ने और आपकी मौज ने ही देनी है।

आपकी सेहत का क्या हाल है ? कृपया लिखें। आशा है कि 20 तारीख को आपके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

आपका जीव
यशपाल भाटिया

पत्र द्वारा ज्ञान

होशियारपुर
13-11-85

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप परम प्रिय यशपाल,

राधास्वामी परम दयाल जी सहाय !

तुम्हारा 10 नवम्बर का पत्र मिला। तुमने जो उसमें सलवान स्कूल के दशहरा सत्संग के बारे में लिखा उसे पढ़कर मुझे यह तसल्ली हुई कि तुमने हंस की तरह मोती चुन लिये। सन्त मत की विशेषता यह है कि यदि सत्संगी में भूख हो और तपन करारी हो तो उसे सद्गुरु से पूर्ण लाभ हो जाता है और वह सहज में ही सभी कर्म-बन्धनों को काट कर जीवन्मुक्ति और विदेह मुक्ति को पा सकता है।

हालाँकि हरएक सत्संगी के अन्दर में परमतत्त्व मौजूद है और उसकी आत्मा निरन्तर उस परमतत्त्व से मिलने के लिए तड़प रही है, फिर भी पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण, या वर्तमान जन्म के वातावरण के प्रभाव के कारण, वह अपनी आत्मा की उस तड़प वाली आवाज को नहीं सुनता जो हर श्वास में उसे आवाहन कर रही है, और कर रही है—"सोहम्-सोहम्"—"मैं वह (परमतत्त्व) हूँ—मैं वह हूँ।" सद्गुरु के सम्पर्क के बिना, और सद्गुरु को साधारण मनुष्य न मानकर उसे परमतत्त्व ही स्वीकार करके उससे प्रेरणा लिये बिना, यह तड़प व्यक्त नहीं होती। हम एक मिनट में अठारह बार साँस लेते हैं। यदि तुम और कुछ भी न करो, केवल अपनी साँस को ही सुनो तो तुम स्पष्ट

रूप से अनुभव करोगे कि साँस का भीतर लेना "सो" है, और साँस का बाहर फेंकना "हं" है। इस प्रकार सोह एक हालत है, एक ध्वन्यात्मक शब्द है, जिसके सुमिरन से मनुष्य भंवरगुफा के उस नाके पर पहुँच जाता है जिससे वह सतलोक में प्रवेश करता है।

सद्गुरु न जन्म लेता है, और न मरता है। वह प्रकट होता है। जब उसकी शरीर-यात्रा समाप्त होने लगती है, वह उसी परमतत्त्वरूपी सद्गुरुत्व को एक अन्य जीवित व्यक्ति में प्रकट कर देता है। निन्यानवे प्रतिशत व्यक्ति तो परम दयाल जी जैसे परमतत्त्व के अवतार को पहचान ही नहीं पाये। इसलिए वह उनके सैकड़ों सत्संगों को सुनने के बाद भी सचेत नहीं हुए। यहाँ पर मुझे फिर कहना पड़ेगा कि सम्भवतया उनके अच्छे प्रारब्धकर्म होते हुए भी, परम दयाल जी महाराज का साक्षात्कार करते हुए भी, उन्होंने उनके जीते-जी भी अपनी संकल्प की स्वतन्त्रता का प्रयोग नहीं किया; इसलिए न उन्होंने परम दयाल जी महाराज के अवतार होने को पहचाना और न उन्होंने संसार की कामनाओं, वासनाओं और विषय-भोग के मुकाबले में सद्गुरु स्वीकार करने का संकल्प किया।

तुम्हारे अन्दर मालिक को मिलने की प्रबल इच्छा थी, इसलिए तुमने परम दयाल जी के इन शब्दों को याद रखा— "बच्चा, जब लकड़ी जल जाती है तो आग और उसमें कोई फर्क नहीं रह जाता।"

ये शब्द हमारे मन में गूंज रहे थे। तुममें रूहानियत की पराकाष्ठा पर पहुंचने की इच्छा थी। तुम्हारी आत्मा-रूपी लकड़ी को परम दयाल जी के उपर्युक्त शब्दों की चिनगारी लग चुकी थी, इसलिए तुमने मेरे सलवान स्कूल के सत्संग में ऐसी प्रेरणा प्राप्त की कि तुम्हें परम दयाल जी

के दर्शन मिले और तुमने साधना जी को माँ भण्डारो की आवाज़ में सुना। इसीलिए तुमने अपने पत्र में यह महसूस किया कि मैं वह सत्संग तुम्हारे ही लिए दे रहा था।

अगर सच पूछो तो मुझे कुछ याद नहीं कि मैंने दशहरे के सत्संगों में क्या कहा। हाँ, मुझे इतना ज़रूर याद है कि मैं बोलते-बोलते किसी अलौकिक धारा में बह गया था और कोई शक्ति मुझे अन्तस् से प्रेरित कर रही थी कि मैं उस धारा को बहाता चला जाऊँ। हाँ, बार-बार जब मैं अपने ही सत्संग के शब्दों की ओर तथा विचारों की ओर ध्यान देता था तो मुझे लगता था कि मैं अपने आप को ही सत्संग करा रहा हूँ।

तुम्हारे इस श्रद्धामय और विश्वासपूर्ण भाव के पत्र को पढ़ने के बाद मुझे यह बात समझ में आई कि परम दयाल जी अपने सत्संगों में बार-बार यह क्यों कहा करते थे—"मैं अपने आपको सत्संग करा रहा हूँ।" इसलिए मेरे प्यारे 'यश', मैं समझता हूँ कि तुमने यह पत्र लिखकर मुझे आभास करा दिया कि तुम मेरे सद्गुरु हो। इसलिए मैं तुम्हें केवल यश नहीं बल्कि सद्गुरु के रूप में सच्चे दिल से नमस्कार करता हूँ और सद्भावना देता हूँ। तुम्हें और तुम्हारे परिवार को दिली आशीर्वाद और राधास्वामी।

आपका फकीरमय
मानव

मानव मन्दिर के सभी पाठकों से निवेदन

"मानव मन्दिर" पत्रिका दिन-प्रतिदिन हरदिल-अजीज़ होती जा रही है। इसके पढ़ने-वालों की संख्या नौ हज़ार (9000) के लगभग पहुँच चुकी है। मालिक कुल पूर्ण धनी

परमसन्त परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज ने इस पत्रिका को चला कर जीवों का बड़ा भारी उपकार किया है। मैं उनकी आज्ञा के अनुसार इस पत्रिका को लगातार छपवा रहा हूँ और सभी सत्संगियों को, परम दयाल जी महाराज की इच्छा के मुताबिक यह पत्रिका नि:शुल्क भेजी जाती है। महंगाई और इस पत्रिका की बढ़ती हुई माँग के कारण इसका सालाना खर्च 2 लाख रुपये से अधिक हो रहा है।

परम दयाल जी इस बारे में अपील किया करते थे कि जो लोग यह महसूस करते हैं कि यह पत्रिका सबके लिए लाभदायक है वे अपनी शक्ति के अनुसार आर्थिक सहायता दे सकते हैं।

मैं भी परम दयाल जी महाराज के पदचिन्हों पर चलते हुए आप सबसे अनुरोध करता हूँ कि आप यथाशक्ति और अपनी दिली इच्छा के अनुसार इस शुभ कार्य में हमारा हाथ वटायें। मैं फिर यही कहूंगा कि आप अपने घर के खर्च और आवश्यकताओं पर खर्च में से काट कर अनुदान न भेजें। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप सब इस ज्ञान-गंगामय पत्रिका से लाभ उठायें ताकि आपका लोक और और परलोक दोनों बन जायें। मैं आप सबको सद्भावना, प्रेम और दिली आशीर्वाद देता हूँ।

आपका फकीरमय
मानव

नोट :—आर्थिक सहायता हो सके तो ड्राफ्ट या चैक के ज़रिये भेजें। मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। यह पैसा भेजते समय एक नोट अवश्य लिखें कि यह पैसा केवल मानव मन्दिर पत्रिका के लिए ही भेजा जा रहा है।

———

परमसन्त

हजूर मानव दयाल जी महाराज

— का —

वसन्त के दौरे का प्रोग्राम

22 जनवरी 1987 —होशियारपुर से दिल्ली को रवानगी।

23 जगवरी 1987 —दिल्ली से रेल द्वारा बलारशा को रवानगी।

24, 25, 26 ,, ,, —अहेरी सत्संग।

27 जनवरी 1987 —अहेरी से सिकन्दराबाद को रवानगी।

28 जनवरी 1987 —सिकन्दराबाद सत्संग विश्राम और विश्व विद्यालय।

4 फरवरी 1987 तक—सिकन्दराबाद व हनमकुण्डा।

4 फरवरी 1987 तक—दिल्ली को रवानगी।

5 फरवरी 1987 — दिल्ली आगमन।

6 फरवरी 1987 —दिल्ली से होशियारपुर को रवानगी।

7 फरवरी 1987 —होशियारपुर वापिसी।

आगे का प्रोग्राम बाद में प्रकाशित होगा।

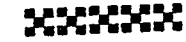

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
परम, सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
दाता दयाल के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

Regd. No. 26265/74 JAN. 10th 1987

MANAV MANDIR NWHSP— 7

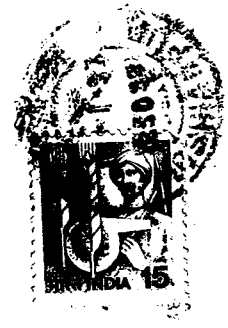

ADDRESS

To

934 Sh. Chilver Narsimula Muneem
P.O. Tq. Banswada
Distt. Nizamabad A.P.

Phone : 2022

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)